केन्द्रीय विद्यालय, आरा

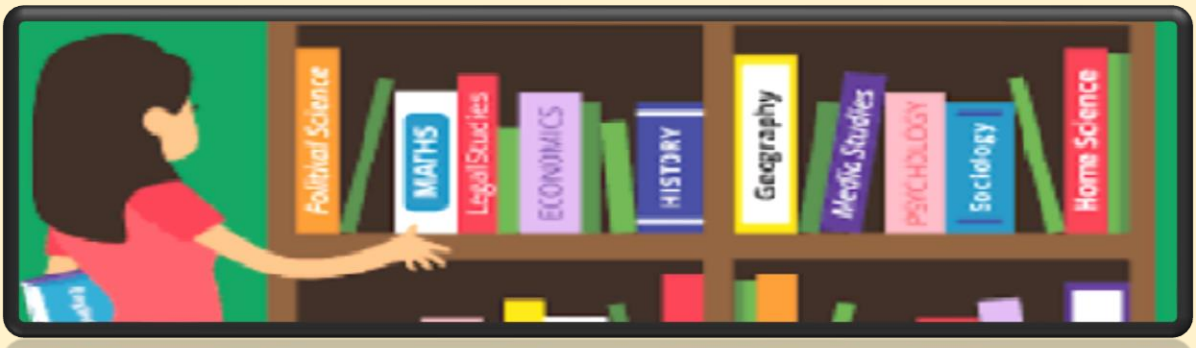

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

विद्यालय पत्रिका

सत्र 2020-21

Celebrating the 150th years of Mahatma Gandhi ji

Inauguration of Mahatma Gandhi's Block by Honourable Chairman cum DM ARA

Torch Bearers Spreading the light of Knowledge through their Vison

KENDRIYA VIDYALYA, ARA

VIDYALAYA PATRIKA-2020-2021

CHIEF PATRON

Hon'ble Nidhi Pandey , IIS
COMMISSIONER
KENDRIYA VIDYALY SANGATHAN
NEW DELHI

PATRON

Sh. Y. Arun Kumar
DEPUTY COMMISIONER
K.V.S. Patna Region

Sh. Ajay Kumar Mishra
ASSISTANT COMMISIONER
K.V.S. Patna Region

Smt. Soma Ghosh
ASSISTANT COMMISIONER
K.V.S. Patna Region

Dr.(Smt) Seema Pradhan
PRINCIPAL

EDITORS

Shri C.P Tiwari PGT(English)
Smt. Anu, PGT(CS)

Web site : www.kvsangathan.nic.in
E-mail address : kvsropatna@yahoo.com
kvsropatna20@rediffmail.Com

Tel. No. 0612- 2361701(DC)
2361831(AO)

केंद्रीय विद्यालय संगठन
(मानवसंसाधनमंत्रालय, शिक्षा विभाग, भारत सरकार)
क्षेत्रीय कार्यालय
पो0 लोहियानगर, कंकड़बाग
पटना: 800 020 (बिहार)

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
[Ministry of HRD, Dept. Of Education , Govt. of India]
REGIONAL OFFICE
P.O.: Lohia Nagar, Kankarbagh
Patna - 800 020 (Bihar)

फा 1-1/डीसी/केविसं/पसं/शैक्षिक/11522

दिनांक 20/08/2020

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय आरा, सत्र 2020-21 हेतु विद्यालय की ई-पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है । कोरोना रूपी आपदा के इस दौर में निःसंदेह एक स्वागत योग्य कदम है । इस प्रयास हेतु विद्यालय की प्राचार्या, स्टाफ एवं छात्र सभी बधाई के पात्र है । विद्यालय पत्रिका विद्यालयी गतिविधियों का दर्पण होती है, बाल-लेखकों की अभिव्यक्ति का मुखपत्र होती है, नवचित्रकारों का कैनवस और विविध ललित कलाओं का एक कोलाज होती है तथा इसमें सीखने और प्रकट करने का अदभुत संयोजन होता है ।

विद्यालय पत्रिका एक मंच है, जहाँ विद्यार्थी अपने कला को प्रदर्शित करने के संकोच को दूर करता है, अपनी रचना को देखकर आत्ममुग्ध होता है और एक संवेदनशील नागरिक बनता है । विद्यार्थियों की कोमल कल्पनाशीलता अभिभावकों को वात्सल्य-भाव से भर देती है । मुझे विश्वास है कि ई-पत्रिका का यह संस्करण अत्यंत उपयोगी होगा ।

शुभकामनाओं के साथ ।

(वाई अरुण कुमार)
उपायुक्त

डॉ0 सीमा प्रधान
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय
आरा

श्री रोशन कुशवाहा

भा.प्र.से
जिला पदाधिकारी एवं समाहर्त्ता
भोजपुर, आरा

दूरभाष:

(का0) 06182–221312
–233311 (आ0) 233474 (फैक्स)
E-mail: dm-bhojpur.bin@nic.in

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय विद्यालय, आरा सत्र 2020–21 का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की प्रगति और गतिशिलता का दर्पण होती है तथा बच्चों के रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देती है। केन्द्रीय विद्यालय, आरा द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित वातावरण प्रदान करने तथा उनके प्रतिभा को रचनात्मकता द्वारा विद्यालय पत्रिका में उजागर करने का सतत् प्रयास सराहनीय है।

कोविड–19 की विश्वव्यापी संक्रमण काल में भी घरों में ही विद्यार्थियों के पठन–पाठन एवं बचाव के संदर्भ में विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकगण द्वारा किया गया प्रयास काफी अच्छा रहा है।

मैं विद्यालय एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की कामना के साथ–साथ विद्यालय परिवार के प्रयास से प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त विद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

जिला पदाधिकारी
भोजपुर, आरा
–सह–
अध्यक्ष, केन्द्रीय प्रबंध समिति
केन्द्रीय विद्यालय, आरा

केन्द्रीय विद्यालय, आरा
KENDRIYA VIDYALAYA, ARA
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of HRD, Govt of India)
जीरो माईल, पी0ओ0– अनाईठ
Zero Mile, Po-Anaith, Distt- ARA
पिन : 802 302 (बिहार) PIN – 802 302 (BIHAR)
के.मा.शि.बोर्ड पं.सं.300044 वि0स050122 CBSE Affl.No. 300044 & School Code-50122
E-mail- principalkvara@yahoo.com Web Site: - www. kvara.edu.in Tel. 06182-294161

From the Principal's Desk

Writing is the most effective means of communication through which our adolescents can release their tension, can express their feelings freely and fearlessly. E-Vidyalaya Patrika thus provides them an open platform to nurture their multifaceted talents, to enable them to project their frustrations, despair and to help them to come out from their stress and strain of growing age of adolescence as well as from the prevailing situations of pandemic.

Be it a storytelling, poetry, prose, drawing or exhibits for the parents, teachers and other to read, to agree and to appreciate and applaud it, will go in a long way in installing in them the confidence to identify their self-strength and potential. The tender buds have to flourish with fresh air or storm, they receive.

Pandemic is the critical period of isolation
Semi sinking boat in the river of hallucination
it's time to concentrate on developing creative skill
Strengthening ourselves for doing with earnest zeal

So, Dear young friends, come forward, read more, write more and stay healthy.

I wish all the success for endeavour to students, staff and editorial board bringing out E- Vidyalaya Patrika.

Dr. (Smt.) Seema Pradhan

Principal

संपादकीय

एक अद्भुत शब्द है-मानसरोवर। ये कभी तो निस्तरंग होता है, तो ठीक अगले ही पल तरंगायित। मन के मानसरोवर से तरह-तरह कि तरंगें उठती हैं- कभी स्फुरण कभी लघु तो कभी उद्भट, उद्दात उर्मियाँ जो उफ़क़ को छूती हैं। नील सरोवर से उठती हैं और नीले नभ तक पहुंचती हैं। मानसरोवर के तरंगों यानि कि कल्पना की कला की इतनी ऊँची उड़ान है, इतनी ऊँची तान है। मन तो केवल शुद्ध मन है, जहाँ केवल संवेग होते हैं, भावों का स्पंदन होता है, व्यथा होती है, हर्ष होता है।

मानसरोवर के तल पर कोई कोई भाषा या विचार नहीं होते। उस संवेग, उस भाव-व्याकुलता से ही विचार पनपते हैं पर ये विचार अलग अलग रुपों में व्यक्त होते हैं, जरुरी नहीं की भाषा में ही। अनुभव एक ही होता है पर अभिव्यक्ति के माध्यम अलग। Experience is the same but means of expression are different.

एक मुस्सविर जब प्रेम में होगा तो उसके तस्वीरों से प्रेम कि तरंगें उठेंगी, जब उदास होगा तो उदासी कि छाया देखने वाले पर पड़ेगी। एक संगीतकार जब मुदित होगा तो उसकी वीणा ये खबर देगी, जब उदास होगा तो ठीक उसी वीणा से करुण स्वर फूटेंगे। एक कवि कि कविता से भी ये भाव ध्वनित होंगे। होता सबको कुछ एक ही है पर अभिव्यक्ति के रूप बदल जाते हैं। कोई तस्वीर खेंचता, कोई सुर उठाता, कोई शब्द जड़ देता।

मन के मानसरोवर से निकली अलग-अलग डालियाँ, तरंगें, जो नक्षत्रों तक जाती हैं और समेट लेती हैं नील समंदर और नील व्योम के मध्य निस्सीम नीरवता को। सभ्यता प्रकृति से इतर मनुष्य के सौंदर्य की जिज्ञासा है। सृजन इस सौंदर्य का उपकरण है। इस सृजन का फलक बहुत व्यापक है, इसमें रंग भी है, रौशनी भी है, रेखा भी है। इसमें रूहानी मौशिकी है तो रक्स भी है।

पर जिस उपकरण ने मानव को सर्वाधिक ऊँचाई दी है वो है साहित्य। जब हवा चलती है तो उन हवाओं में प्रकृति के गीत भी बजते हैं और पेड़ो की टहनियों और पक्षियों के गीत के ताल पर नदियां थिरकती है पेड़ झूमते हैं और पूरी समष्टि नाचती है। तो ये रंग और रक्स-ए-मौशिकी तो कुदरत में ही है मगर एक बात जो मनुष्यों को इससे अलग करती है वो है शब्द और विचार।

कोरोना महामारी के इस अभूतपूर्व संकटकाल में जब कि समूचे मानव जाति पर ही खतरा है हमारे विद्यालय की प्राचार्या जो कि स्वयं एक प्रखर कवयित्री और शब्दशिल्पी हैं ने ये निर्णय किया कि इस समय जब कि छात्रों का शारीरिक संचार रुक सा गया है उनके शब्द और विचार जरूर संचारित होने चाहिए। यह विद्यालय पत्रिका उसी दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। .

चंद्रप्रकाश तिवारी
पी जी टी - अंग्रेजी

VMC MEETING

Counselling Session by Nominee Chairman VMC cum DDC ARA

Tree Plantation by Students and VMC Member

Glimpses of School Activities

Excursion Trip

Sarva Dharam Prarthana

Swach Bharat Abhiyaan

Matri Bhasha Divas

Opportunities & Exposures

Art & Craft Competition

Creative Platform of Expression

Cultural Activities

Accolades

Album of Versatility

ENGLISH SECTION

To get Current Magazines, Novels, News Paper,

Text Books, Study Material, Class Transaction Videos of All Subject Teachers click on following link:

http://kvaralibrary.blogspot.com/

English Section

S. I .No	Title	Writer
1	Education in India At a Glance	Aditi Kundu -TGT English
2	Importance of Mathematics	Ananya Shrey (X A)
3	Amazing Facts about Mathematics	Ananya Shrey (X A)
4	Lockdown: Family Time Freedom and Fun	Shubham Kumar, X-B
5	Mathematics of Roughness	Priyanka (XII)
6	Multiculturalism in India	Soumya Vatsyayan (X A)
7	The Conservation Theorems	Priynka (XII)
8	World of Thought	Khalaf Jamal (X B)
9	I am Every Woman	Lakshmi Kumari (X B)
10	Math about Me	Ananya (VIII)
11	Perplexing Beauty of Space	Kali Kumari (VIII A)
12	Some Interesting Information about ISRO – Our Pride	Kali Kumari (VIII A)
13	Fight Against Corona	Bhaskar (X A)
14	My Poem Entitled	Bhaskar (X A)
15	Death: A Carpe Dium of Life	Muskan Pratap (XII)
16	Corona Virus: Lesson and Learning	Srishti Kumari (X B)
17	Articles on Mathematics	Chaitanya (VIII B)

EDUCATION IN INDIA AT A GLANCE

Since the formation of Indian Republic, thinkers, politicians and nationalistic leaders felt the need of an independent education for Indians. After 1947 in order to address the problems of illiteracy in both rural and urban India, leaders and Indian government launched a variety of programmes. Following data is the living testimony of the success story of educational framework in India so far.

Year	Literacy Rate (Data Source Census India)
1951	18.33
1961	28.3
1971	34.45
1981	43.75
1991	52.21
2001	64.83
2011	74.04
2020	84.7

The Union government established the University Education Commission (1948–1949) under the chairmanship of Dr. Radhakrishnan, the Secondary Education Commission (1952–1953) under the leadership of Dr. A.Lakshmanswami Mudaliar ,University Grants Commission and the Kothari Commission (1964–66),the most effective commission so far to find out the drawbacks, crucial problems of Indian education and also to develop proposals and recommendations to improve the situation and modernise India's education as well. Needless to say in our constitution there are adequate provisions for education of backward classes,minority and women. However, it was the government of Jawaharlal Nehru who for

the first time thought about scientific policy for the country's education system. In 1961, the Union government formed the National Council of Educational Research and Training (NCERT) as an autonomous organisation that would advise both the Union and state governments on formulating and implementing education policies.

The government of Prime Minister Indira Gandhi announced the first National Policy on Education in 1968 based on the recommendations of the Kothari Commission, which proposed equal educational opportunities in order to achieve national integration and greater cultural and economic development. According to the National Policy on Education-1968, the government of India had formulated certain principles to promote the development of education in the country such as Free and Compulsory Education, the "three language formula" to be implemented in secondary education, Education Opportunity for all etc

The government of Rajiv Gandhi introduced a new National policy on Education in 1986. It was especially for Indian women, Scheduled Tribes (ST) and the Scheduled Caste (SC) communities. This NPE focused on "child centric approach" in primary education and started "operational Blackboard" to improve primary schools throughout the country. Creation of the "rural university" model is another revolutionary principle of this NPE.

In 1992 National policy on Education was modified by P. V. Narasimha Rao government. The main objective of the National Policy of Education of 1986 and Programme of Action, 1992 was to establish a national system of education implies that all students irrespective of caste; creed, sex, and religion have access to education of a comparable quality All India bases common entrance

examination for admission in all professional and technical programme was another unique decision conceived by POA under NPE 1992.

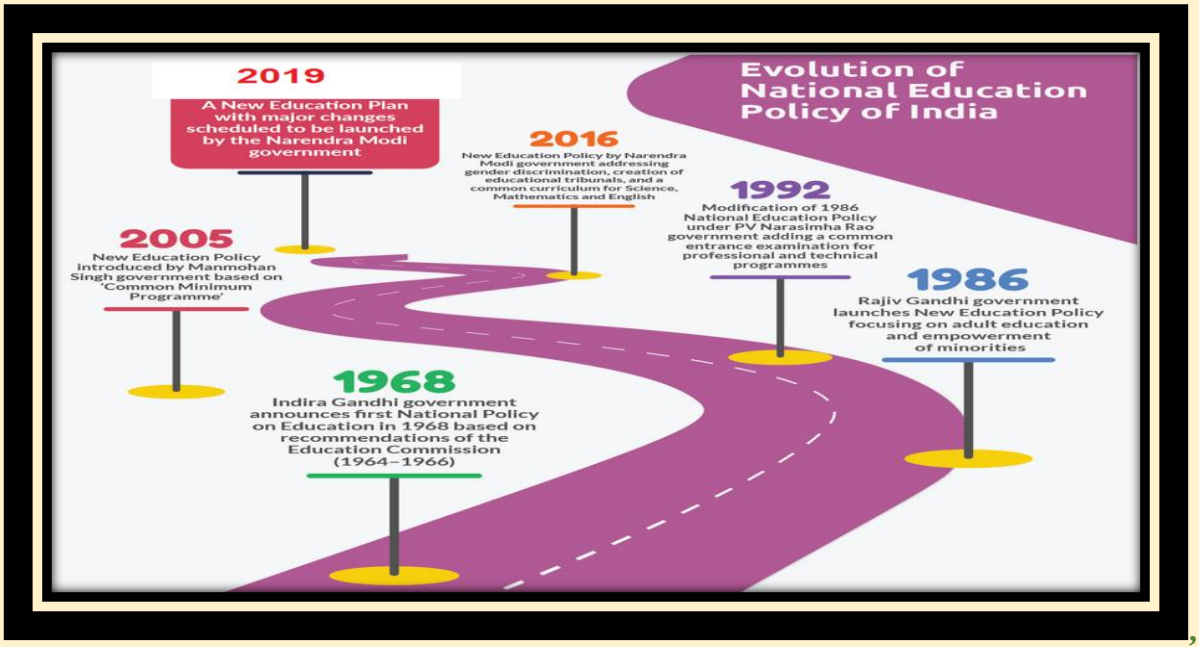

,

On 29 July 2020 The union cabinet of India approved the National Education Policy 2020 (NEP 2020) that aims to overhaul the country's education system. The policy is a comprehensive framework for elementary education to higher education as well as vocational training in both rural and urban India. Some key points of this policy are focus on vocational studies in school- level, Pre- school section in Kendriya Vidyalayas, NCC wings in secondary and higher secondary schools under Ministry of Defence, School complexes to be used for adult education courses after school hours, Medium of instruction until at least Grade 5 will be the local/ regional language, No hard separation of streams for students, Importance of board exam to be reduced, exam can be conducted twice a year etc.

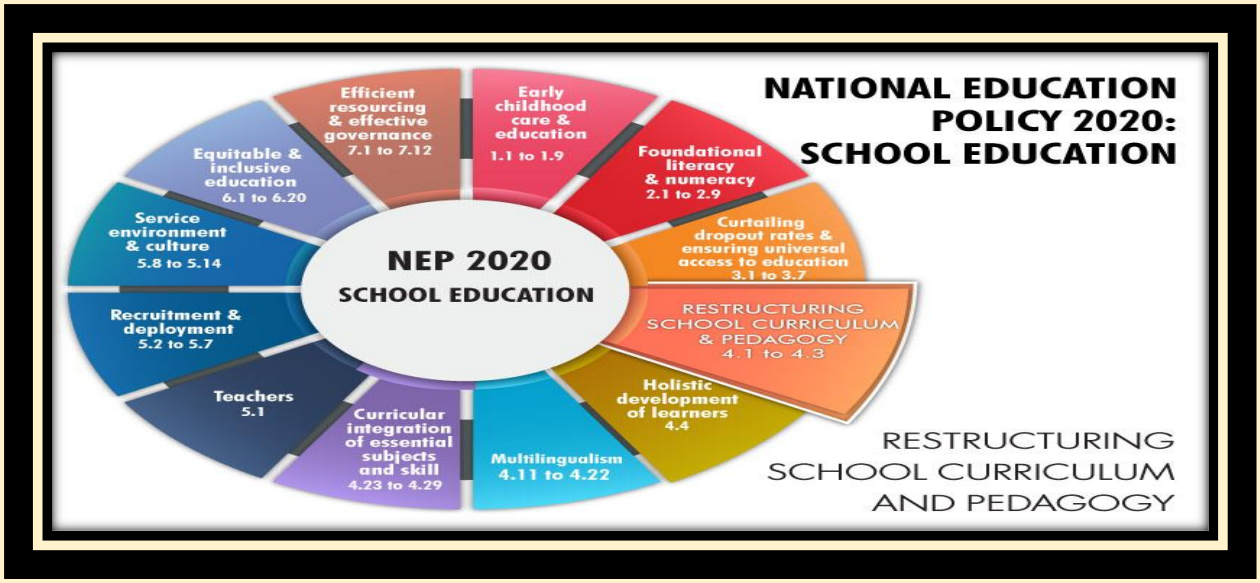

Education is our basic right, a fundamental necessity of all individuals. In spite of the persistent endeavours of all marked commissions and previous policies for the overall improvement of education in our country, many genuine dreams have remained unfulfilled. Rapid economic growth after 1991 in our country along with huge transformation in world's political economy have fuelled aspirations and hopes of many people for more knowledge and specialised skills. Only an effective implementation of recent NEP 2020 can alter the entire educational scenario and make it a successful one.

Following are the underlying parameters to leverage Indian Education Scenario positively:

- **Schooling to begin from the age of 3 years**
- **Mother tongue to be instated as medium of instruction**
- **A Single Overarching Body of Higher Education**
- **Separation between subject streams to be blurred**
- **The Return of the FYUP Programme and No More Dropouts**

Aditi Kundu, TGT-English

Importance of Mathematics

It is said that mathematics is the gate and key of science. According to famous philosopher Kant "A science is exact only in so far as it employs mathematics". So, all scientific education which does not commence with mathematics is said to be defective as its foundation. According to Roger Bacon "Neglect of mathematics work injury to all knowledge, since he who is ignorant of it cannot know other sciences or things of the world. And, what is worst, those who are thus ignorant are unable to perceive their own ignorance, and so do not seek a remedy". So, Kant says, "A Natural Science is a Science in so far as it is Mathematical". And mathematics has played a very important role in building up Modern Civilization by perfecting all Sciences. In this modern age of Science and Technology, emphasis is given on science such as Physics, Chemistry, Biology, medical and Engineering. Mathematics which is a Science by any criterion, also is an efficient and necessary tool being employed by all these Sciences. As a matter of fact, all these Sciences progress only with aid of mathematics. So, it is aptly remarked, "Mathematics is a Science of all the Sciences and art of all arts". Mathematics is a creation of human mind concerned chiefly with ideas, processes and reasoning. It is much more than Arithmetic, more than Algebra more than geometry. As it is more than Trigonometry, Statistics and calculus. Primarily, mathematics is a way of thinking, a way of organizing a logical proof. As a way of reasoning, it gives an insight into the power in human mind, so this form a very valuable discipline of teaching-learning programs of school subjects everywhere in the world of curious children. At last, teaching of mathematics has its aim and objectives to be incorporated in the school curriculam. If and when mathematics is removed, the back bone of our material civilization would collapse. So, it is the importance of mathematics and its pedagogic.

Thank you!!

(Ananya Shrey, Class-10th A)

Amazing facts about Maths

Words such as formula, equations and calculation sound boring for those who hate maths as a subject, whereas it is fun for those who have been taken interest in solving problems/equations.

On 14th October every year this day is celebrated as World Maths Day. Now let's go and know some amazing facts about maths:

1.Zero (0) is only number which cannot be represented by Roman Numerals.

What comes after million, billion and trillion? A quadrillion, quintillion, sextillion, septillion, octillion, nonillion, decillion and undecillion.

4.Plus (+) and Minus (-) sign symbols were used as early as 1489 A.D.

5. 2 or 5 are only prime numbers that end in 2 or 5.

6. An icosagon is a shape with 20 sides.

7.40 when written "forty" is the only number with letters in alphabetical order, while one when written "one" is only one number with letters in reverse order.

8. From 0 to 1000, the letter "A" only appears in 1,000 (one thousand).

9. Abacus is considered as an origin of calculator.

10. Have you heard about a Palindrome Number? It is a number that reads the same backward and forward. Example: 12421

11.Every odd number has letter "e" in it.

12. The word "mathematics" only appears in one Shakespearean play "The Taming of the Shrew".

13. The symbol of division (i.e ÷) is known as obelus.

14. -40°C is equal to-40°F.

Thank you!!

(Ananya Shrey, Class-10th A)

Lockdown: Family Time Freedom and Fun

THE LOVE OF A FAMILY IS THE GREATEST BLESSING

We have never imagined that we would have to be stuck inside for so long. However, time has also given us the opportunity to rekindle the relationship we lost with our family. With the fast-paced lives, we are living, we hardly sit together as a family. The lockdown has given us a chance to go back to the days when family time was the most important time of the day. Here a few ways in which the lockdown has benefited families.

Family Mealtime:
Sitting together to eat as a family was one of the most important things that we stopped doing. However, with the lockdown and all the family members at home the tradition of eating together is back.

Dinner Table Conversation:
Now that we are all eating together we are also talking to our family much more. We are talking about our day, how we are feeling and how we are coping with the pandemic.

Household Chores Together:
Families are coming together to keep the house clean. With the house helps not there to help, everyone at home is doing chores from sweeping to washing clothes which makes them a perfect way to bond as well have fun.

We Get Less Offended:
You definitely understand your family better after the lockdown. You know much more about them and how you they think. You are also more welcoming to their ideas and thoughts and naturally tend to get a little less bothered by things you might have otherwise.

Board Games Are Back:
We spent our childhood with these games, but never got the time to sit and enjoy them when we grew up. But now we are spending more time on these games and enjoying with our family.

Finally, this lockdown has given us very much time to spend with our family, to live freely and have fun.

Shubham Kumar, X-B

Mathematics of Roughness

"Mathematics is the language in which God has written the universe."

-Galileo Galeli

Observed from evolutionary biology to modern technology one of the ridiculously beautiful geometrical figures has been presenting itself in various forms before us but somehow it still stays disguised to our eyes.
Introduced by Benoit Mandelbrot in 1975, fractals Latin for fracture or broken were the self-symmetrical (not all of them are perfect but they are almost) geometries that are seen almost everywhere in nature. A fractal is a non-regular geometrical figure with the property of the whole design looking like a part of itself, which in return looks like another broken part of the previously broken part.

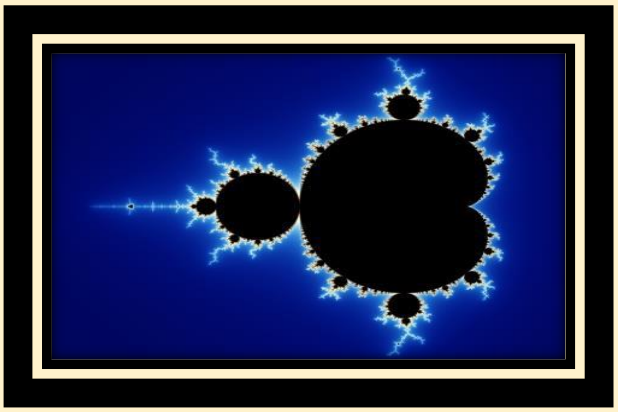

It's seen in the patterns of lightning strikes, branching of trees, generic of living organisms forming the pattern of our nerves, paths of the rivers, mountains, freezing water, and has also been involved technology in form of antenna designs that capture a very large range of frequencies (which are used in phones).They look quite complex on the surface but understanding how they were produced gives a ridiculously over simplified picture of what it is. The story begins with definition of a curve back in late 19th century. Gaston Julia the French mathematician introduced another infinite set of numbers that generate initially using an equation. He took a few numbers and then re-entered the output generated from the equation back into the same equation once again. He repeated that over many times and the generated numbers were given a name of Julia set. It wasn't possible during his time to produce too many numbers of that his set because of technological drawbacks but after IBM was established Mandelbrot was able to iterated the numbers from Julia set infinite times and the image that it generated gave him the idea for his new work.
In 1980 he defined a formula of his own as mentioned:

$$z_{n+1} = z_n^2 + c$$

The numbers generated by IBM with this equation were called a part of Mandelbrot set. When this equation was iterated over a large number of times the graph produced by those numbers gave a map of what we call as the Mandelbrot fractal.
A Mandelbrot Fractal became one of the fundamental figures in fractal geometry and many other like Julia Fractal, Newton's Fractal, Von Koch Snowflake, Sierpinski Triangle, Seed Fractal were introduced in the fields of Fractal geometry.
Isn't it crazy how beautifully a simple quadratic expression is governing the way things work around us?

Priyanka Kumari, Class-XII

MULTICULTARLISM IN INDIA

As we know that, 'IN DIVERSITY THERE IS BEAUTY AND THERE IS STRENGH'' and multiculturalism is all about diversity. Multiculturalism is defined as co-existence of diverse cultures. It is one way of approaching cultural diversity within a society. The very concept of multiculturalism originated in 1970s and was in Canada for the first time.
India is the best example of multicultural society where people speak 122 major languages and 1599 other languages. Unity in diversity is the beauty of India and the Indian constitution assigns equal rights, privileges and duties to all people irrespective of gender, caste, class, community and religion etc. The Indian society has been multicultural, multi- religious, and multi linguistic from time immemorial. This unique unity of India in the midst of multicultural diversity and enjoying unlimited freedom as largest democracy in the world is the beauty of India which is wonder to world.

Multiculturalism in India is only because of the government but also the citizens of the country are supportive in this context. We can easily find Hindus celebrating Muslims festivals and Muslims celebrating Hindus festivals. Considering multicultural society of our country, The Indian constitution has included innumerable acts by which the marginalized sections of the country are given sufficient protection. Thus, the scheduled tribes and castes get reservation in education as well in employment. In addition to these two major minority religious sections - Muslims and Sikhs enjoy special rights in our country. Language plays a prominent role in multicultural society.

As in India there is no official language, English is used as surficial language. By this no one is forced to speak Hindi in our country. India had always been in support of multiculturalism, as the political imagination of the leaders of freedom struggle was to create a modern nation with the judicious blending of cultural rights of the people following their culture, religion and tradition. The western society discovered the idea of secularism through the long and sustained struggle between the sword and the cross. Unlike them, India came to terms with this idea in consonance with its existing social reality along with emphatic need to ensure equality, justice and freedom to its plural and multicultural society. In India from time immemorial there had been no policy of majoritarianism. It always supported all cultures of all religions. That's why India is a unique and a multicultural country.

(Soumya Vatsyayan, Class- 10th A)

The Conservation Theorems

“My methods are really methods of working and thinking; this is why they have crept in everywhere anonymously.”

-Emmy Noether

Conservation laws as they sound like state conservation of a physical quantity and are generally taken fundamental which is not “always” true.

“The law of conservation of energy” has always been there except for its proof. The only thing we had in our books were verifications but one wrong observation is enough to question a theory so here I am with an example that defies the conservation of energy law.

Einstein’s general relativity’s math gives a clear description of that. One of the examples being the energy lost by a photon travelling from one of our neighbours say Andromeda from a star at the edge of the galaxy to the lens of the Hubble telescope.

The photon had its maximum energy at the surface, almost violet in colour with minimum wavelength a particle can have but as soon as it began the journey toward out planet its colour began dropping down the spectrum to red to non-visible electromagnetic radiation.

Another example being the “Virtual particles” the ones that come out of nothing (I’m not kidding it’s literally nothing) and the reason of accumulation of anti-matter at the edge of Black holes and give rise to Hawking’s radiation.

There are many such conservation laws out there in physics so basic that you might consider them as fundamental after the first understanding, which is not exactly true. As for example: for “the conservation of charge, baryons and leptons” all you have to do is to count the charges, baryons and leptons (such as electron, neutrinos, muons etc.) respectively which may

sound like fundamentals but trust me the roots are deeper. All these conservation laws are linked together by a very beautiful thread "Noether's theorem".

Let's begin the story.

Fermat's principle as mentioned in optics states that the light always takes the path which takes least time to travel, an extension of this is "Principle of Least action" which just replaces the word light with any state in universe and this is what we need to understand the mathematics behind Noether's theorem. Given by one of the greatest and underrated mathematicians of her time it states that the conservation of a physical quantity occurs only when there is continuous symmetry with respect to any coordinate for any shift for a change.

Continuous symmetry as in how a sphere is continuously symmetric at any angle you rotate it at another example being the empty blender file when you have no object and axis there left and are lift with nothing to define an origin.

Noether's theorem asks for such conditions only.

Like if an action is continuously symmetrical for the fourth dimension i.e. time it gives rise to what we call as "The conservation of energy", the symmetry with respect to rotation gives rise to "The Conservation of angular momentum", symmetry in phase of a quantum field under Gauge symmetries gives rise to "Conservation of electric charge".

In case of general relativity, the symmetry was broken because of the dynamic nature of space-time and no symmetry predicts no conservation by Noether's theorem making "The conservation of Energy" a special case in Einstein's universe.

Like Feynman said in his Lectures of Physics Volume I "As independence of space has to do with conservation of momentum, independence of time has to do with conservation of energy".

You see the universe is quite a stunning place for the eyes that wants to see and brains that want to understand.

Priyanka Kumari, Class- XII

World of Thought

One day I sat to write Something attractive and bright
So I started my train of thought
Which led me to the world of thoughts
But my every single thought went in vain
Because everything I thought was a product of other's brain
For once I thought I should give up
But there was something that kept me up.
Then I closed my eyes and took a deep breath in.
And I began to explore the world I was in.
Then I reached a place, which glowed my face.
Then I finished writing this with a smile on my face.

Khalaf Jamal,Class-X-B

I am every woman

A woman is beauty innate.
A symbol of power and strength.
She pets her life at stake.
She is real, she is not fake!
The summer of life she is ready to see in spring.
She says, "Spring will come again my dear hit me care for the ones who are near".

She's the woman-she has no fear.
Strong is she in her faith and beliefs.
"Persistence is the key to everything."

Says she. Despite the sighs and groans and moans
She is strong in her faith, firm in her belief!
She's a lioness don't mess with her
She will not spare you if you are a prankster.
Do not ever try to saw her pride, her say respect.
She knows how to thaw you, saw you – so beware.
She is today's women. Today's woman dear love her, respect her, keep her near.

(Name- Lakshmi Kumari, Class- Xth 'B')

Math about Me

Number's - Number's an around, everywhere they can be found.
Numbers tell how old I am, and how many people in my FAM.
How much I weight and just how tall where I live, and that's not all.
Number are a part of me, money, times and history.
When to wake up and when to eat, what size shoes to buy for my foot……
How much money something costs, A number to call if my dog gets lost.
I don't know where I would be, if number weren't a part of me.

(Name- Ananya , Class- 8 A)

Perplexing Beauty of Space

- **Earth is only known planet with plate tectonics.**
- **You wouldn't be able to walk on Jupiter Saturn, or Neptune because they have no solid surface.**
- **The sunset on Mars appears blue.**
- **The highest mountain know to human is on Mars known as OLYMPUS MONS measuring a height of 21.9 km.**
- **The planet Saturn would float on water – It's the only planet in our solar system that could because it is only made of gases.**
- **One year of Saturn is more than 29 Earth years.**

(Kali Kumari, Class- 8 A)

Some Interesting Information About ISRO – Our Pride

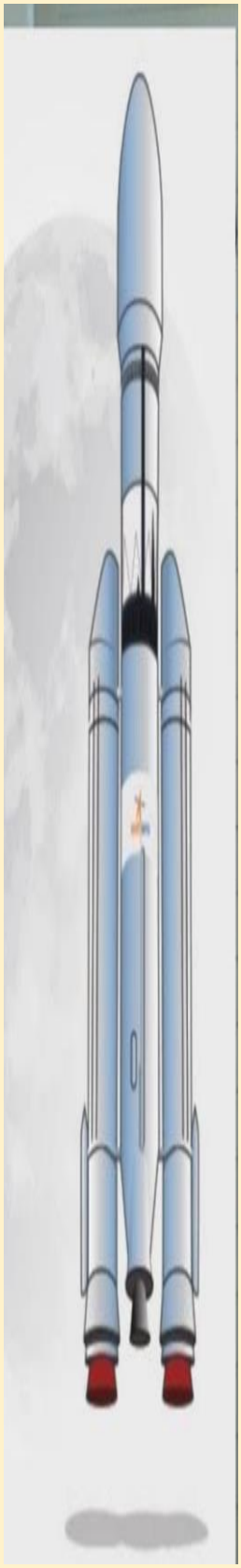

- **ISRO stands for Indian space Research organisation.**
- **ISRO was formed on Independence Day 1969 by Dr. Vikram Sarabhai.**
- **SLV – 3 was India's first launched indigenous satellite launch vehicle and A.P.J Abdul Kalam Ji was director of the project.**
- **ISRO's expenditure in the last 40 years = Half of NASA's single year budget.**
- **ISRO developed BHUVAN, A Web – based 3D satellite imagery tool which is the Indian incarnation of Google earth.**
- **ISRO has 13 centres spread all over India.**
- **ISRO's mars mission (MOM) is the cheapest so far just 450 crores. i.e. Rs 12 per km equivalent to auto fare.**
- **India (ISRO) is the only one country who has reached to the mars in his first attempt.**
- **ISRO is credited for having the greatest number of Bachelors in any scientific organization.**
- **Indian First Communication Satellite – APPLE (Arian Passenger Payload Experiment)**

(Kali Kumari, Class- 8 A)

FIGHT AGAINST CORONA

Lockdown is a scary time,
So, I thought that I would write a rhyme.
World is suffering from a worst time,
Don't go outside, it is a crime.
If you have to go out, think twice,
Wear your mask, be wise.

Don't touch your face, nose, and eyes,
Use sanitizer, please don't compromise.
We'll fight against COVID-19, that's the hope,
Wash your hands with water and soap.
Use tissue when you cough and sneeze,
Corona is a pandemic disease.
Spend your time with family and friends,
Now future of the world is in your hands.
Started in China, now the world is sick, Let us unite and find a cure, quick.
Don't waste this precious time, One day, our earth will again shine.

'JAI HIND'

(BHASKAR, Class- 10th A)

My Poem Entitled

To keep yourself busy, is not that easy.

To make yourself busy is not

that easy.

An empty head, heavies a heart

with anxieties.

Of some known and unknown.

Some we see with the intuition

Of some yet to unfold.

We may admire the chirping of

birds, rustling of dry leaves.

Beautiful pigeons lined upon electric wires.

The observation is deep and so repetitive.

That it loses its genuine feeling of

being appreciative.

Do not know how long this

Prolonged agony would be.

What disgrace humans have

bought to nature in times we see.

Reading books, singing, dancing, cooking are

the activities we do believe keep us busy.

Yet some where there is query which answers.

That to keep oneself busy is not at all easy.

Especially when the head does not answer

all the heart anxieties.

'JAI HIND' **(BHASKAR, Class- 10th A)**

Death – A Carpedium of Life

Death is an inevitable part of life. It is an extension as well as a ghat of journey for us. It is a universal law and without being neurotic, we must accept death, blissfully. We start dying really when we start breathing, at the same moment. Death has always been with us from the very beginning. It is like an innermost centre, it grows with us, and one day it comes to a culmination, one day it comes to flowering. The day of death isn't the day of death's coming instead it's the time of flowering.

Thereafter, we will disappear like a snowflake in pure air Yes, we will not be found in an individual form. We disappear back into origin. When the river disappears into the ocean, it isn't dying instead it's like becoming an ocean.

People who have expanded their range of thought in the pursuit of awareness are convinced that they came with nothing and therefore, would lose nothing from death. Therefore, it's welcome without fear. The more we fight with death, the more anxious we will become. In life, everything else is uncertain, only death is certain. It is an intrinsic part of life. So, we must accept death as a friend, suddenly a transformation happens. Then only our life becomes a friend also.

This may look a paradoxical or catch-22, but is so only the appearance is paradoxical. If death is an enemy, then deep down life is also an enemy. It's because life leads to death.

Death is the final offering. It is the highest, it is the crowning or the freak. Death is the essence and flowering of life.

It's human psyche that after death we'll get hell or heaven. Hell isn't part of geography, it is part of our psychology, and so is heaven.

We create our hell, we create our heaven. Here, somebody is living in heaven and somebody is liking in hell; and they may be friends. If you live in mind, you live in hell. If you live in the no-mind, you live in heaven.

To the well-organized mind, death is nothing but the next generation.

(Muskan Pratap , Class-XII (Science)

Corona Viruses: lesson and learning

The long lockdown for the covid-19 pandemic has closed school, colleges, and other educational institution and ushered in the citywide classroom: tens of thousands of students in cities and towns are glued to computers and smartphone screen as teacher take to online apps for lecture tutorials, and assessment.

e-learning possess a challenge to both teachers and students over technology and access, but it is keeping everyone busy with worksheet, video lecture, and assignment.

Some institution are uploading lecture to YouTube, while Kendriya Vidyalaya Sangthan is developing its Swayam Prabha portal, which has lectures on DTH and online, to help students. The Live programs and the recorded ones of NIOS are available. Meanwhile, KVS has informed teachers , students, their parents through various media such as email, WhatsApp, SMS etc. to ensure the benefit of maximum number of students by the programme.

(Srishti Kumari, Class:- 10th 'b')

Article on Mathematics

If you find mathematics is boring then it is taught by the wrong person to you!

Mathematics is pure and it doesn't decay, it only needs your mind, your thoughts to make it work. Mathematics goes beyond the real world but the real world is ruled by it. Mathematics is a universal language, it doesn't matter from where you are which country do you live which language you speak mathematics is the same for everybody, in fact it is quite possible that mathematics may become a common link between ourselves and aliens one day.

Where did mathematics come from?

Nobody is certain about it, but math is simply part of us even people without mathematical training can use their finger to count, can use basic logics solve things and can recognise different properties.

Mathematics is logical, fun and challenging, mathematics is challenging to the mind

Mathematics is an adventure!

(Name Chaitanya, class 8 B)

Celebration of Important Days

Republic Day

Girls Troop Marching During Independence Day

Women's Day Celebration

Celebration of International Yoga Day

Celebration & Innaugration of Annual Day

Celebration of Children Day

Celebration of Quit India Movement Day

Celebration of Sports Day

Observance Vigilance Awareness Week

हिन्दी विभाग

हिन्दी अनुभाग

क्र. सं0	शिर्षक	लेखक
1	माँ की प्यारी सीख	सलोनी प्रिया (X B)
2	गर्मी की छुट्टीयाँ	अंजली कुमारी (X A)
3	जिन्द्रगी	मीतराज सिंह (IX A)
4	लॉकडाउन के फायदे	निशांत गुप्ता (IX A)
5	वीर जवानों की कुर्बानी	सात्विक राज (IX A)
6	पिता जी का इंटरव्यू	सृजिका भट्ट (X B)
7	अनसुनी बुराई	सृष्टि कुमारी (X B)
8	इंसानीयत	सुहानी (IX A)
9	लॉकडाउन में भारत	श्वेतांशु चौहान (IX A)
10	मन की बात	विक्की राज (X B)
11	माँ	सिमि सिंह (X A)
12	अगर बचना है कोरोना से	हर्षित सिंह
13	प्यारे पापा	सृजिका भट्ट
14	कोरोना महामारी	अन्नया (VIII A)
15	माँ	काजल (X A)
संस्कृत अनुभाग		
1	छात्रजीवने	प्रिय रघुवंशी-VI A, कोमल कुमारी -VIII B अदिति कुमारी-VIII B
2	संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणचेतना	श्रुति जायसवाल टी.जी.टो (संस्कृत)

माँ की प्यारी सीख

चेतन अपनी माँ के साथ एक बहुत अच्छे घर में रहता था। वह बहुत अच्छा लड़का था। और सदा अपनी माँ का कहना माना करता था। चेतन की माँ बहुत अच्छे पकवान बनाती थी। चेतन को पकवान खाना बहुत पसंद था। एक दिन चेतन की माँ ने बहुत बढ़िया कुकीज बनाकर, एक बड़े जार में रख दिया और फिर बाजार चली गई। बाजार जाने से पहले चेतन की माँ उसको कह गई थी कि अपना गृह कार्य समाप्त करने के बाद वह कुकीज खा सकता है। चेतन बहुत खुश हुआ। उसने जल्दी से अपना गृह कार्य समाप्त करके, अपनी माँ के लौटने से पहले ही कुकीज खानी चाही। इसलिए वह एक स्टूल पर चढ़ गया। फिर उसने जार के अंदर हाथ डालकर ढेर सारी कुकीज निकालने की कोशिश की, पर जार के मुंह छोटा होने के कारण वह अपने हाथ बाहर नहीं निकाल सका। उसी समय उसकी माँ बाजार से लौट आई। जब उसने चेतन को देखा तो वह हंसने लगी और अपने बेटे चेतन से कहा– केवल दो या तीन कुकीज हाथ में पकड़ कर हाथ बाहर निकालो! माँ की बात मान कर, जब उसने सिर्फ दो कुकीज हाथ में पकड़ी, तब वह अपना हाथ आसानी से बाहर निकाल सका। तब उसकी माँ ने प्यार से कहा– ऐसा करने से तुम्हें क्या सीख मिली? चेतन ने कहा– मैंने सीखा है कि किसी भी चीज का लालच अच्छी बात नहीं है। हमें हर चीज उतनी ही लेनी चाहिए जितनी हमें जरूरत हो।

नाम – शलोनी प्रिया

कक्षा – 10 ''ब''

वे गर्मी की छुट्टियां

गर्मी की छुट्टियों का आनंद तभी आता है जब हम खूब सारी आइसक्रीम खाएं नानी से मिलने उनके घर जाएं और नानी अंजली कह कर गोद में उठा कर झूम उठे कहे कि मेरी लाडली आ गई। हमें नानी खूब सारी कहानियां सुनाएं हम उन से अपनी सारी बातें कहें और हम खूब सारी बातें करें या फिर हम कहीं दूर घूमने जाएं अपने परिवार के साथ खूब मस्ती करें नई- नई चीजें देख नई--नई चीजे सीखें। परंतु इस साल हम कुछ नहीं कर पाए क्योंकि पूरे भारत देश में कोविड19 का संक्रमण फैला हुआ है। जिसके कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लॉक डाउन की घोषणा की है । जिसमें कोई भी व्यक्ति बिना किसी कारण घर से नहीं निकल सकता । हर वर्ष हमें स्कूल से कॉपी पर लिखकर होमवर्क मिला करता था । परंतु इस वर्ष हमें व्हाट्सएप पर मैसेज कर होमवर्क मिले और सभी बच्चों ने होमवर्क कर शिक्षकों को फोटो खींचकर भेजा। ना ही इस गर्मी की छुट्टी में हमें आइसक्रीम खाने मिले क्योंकि कोरोना के कारण ठंडी चीजें खाना मना हो चुका था। इस साल तो हमें पता भी नहीं चला और कब गर्मी की छुट्टियां चली ही गई।।

अंजली कुमारी।।

कक्षा – 10 ''ब''

जिंदगी

तू जिंदगी को जी,

उसे समझने की कोशिश ना कर,

सुन्दर सपनो के ताने बाने बून,

उसमे उलझने की कोशिश ना कर,

चलते वक्त के साथ तू भी चल,

उसमे सीमटने की कोशिश ना कर,

अपने हाथो को फैला, खुल के साँस ले,

अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश ना कर,

मन मे चल रहे युद्ध को विराम दे,

खामखाँह खुद से लड़ने की कोशिश ना कर,

कुछ बाते भगवान पर छोड़ दे,

सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश ना कर,

रास्ते की सुन्दरता की लुत्फ़ उठा,

मंजिल पर जल्दी पहुचने की कोशिश ना कर,

बस जिन्दी को समझ के जी.....

Meet Raj Singh

9th A

लॉकडाउन के फायदे

हमारा देश इन दिनों एक महामारी का सामना कर रहा है। इस महामारी का नाम कोरोना है। इसे कोविड 19 भी कहा जाता है। इस महामारी में घर से नहीं निकलने के सरकार के आदेश हैं। इसे लॉक डाउन कहा जा रहा है।

हम सभी इस समय घर पर ही रहे। परिवार के साथ हमने बहुत सारे अच्छे अच्छे काम किए।

1.सबसे पहले तो हमने सुबह उठकर व्यायाम और योगा करने की आदत डाली।

2. फिर हमने घर के गमलों में लगे पौधों के बारे में अपने दादाजी से जाना।

3.हमने हर दिन पौधों को पानी दिया।

4.हमने घर में रह कर देखा कि हमारी मां कितने सारे काम करती है,हमने उनसे बहुत सारी बातें सीखी।

5.हमने सुबह उठ कर घर की साफ सफाई को देखा और झाड़ू लगाना सीखा।

6.हमने देखा कि सुबह उठ कर दादी जी पूजा करती है, हमने उनसे सुबह की प्रार्थना सीखी।

7.स्कूल के दिनों में हम जो खेल नहीं खेल पाते थे, घर में रह कर हमने वो खेल सीखे।

8. हमने अपनी चीजों को व्यवस्थित रखना सीखा।

9.हमने बेकार हो गई चीजों से काम का सामान और खिलौने बनाना सीखा।

10.हमने कई अच्छी किताबें पढ़ीं जो हमें नैतिक शिक्षा देती है। लॉक डाउन में हमने जाना कि कैसे घर में रहकर बहुत सारे काम किए जाते हैं।

निशांत गुप्ता

कक्षा नवम् -'अ'

वीर जवानों की कुर्बानी

वीर जवानों की शहादत पर गूंज रहा था ,

सारा देश ,वही भगत सिंह थे ,वही राजगुरु और वही थे सुखदेव,

भारत माता की आजादी की खातिर, धरे थे न जाने उन्होंने कितने ही भेष

लहूलुहान हुई जा रही थी भूमि अपनी और बादलों मे छाई हुई थी लालिमा

आजादी आजादी के स्वरों से गूंज रहा था जहाँ-,

इन वीर शहीदों की कुर्बानी से आँखे सबकी भर आई थी ,

जब देश के खातिर उन्होंने अपनी कीमती जान गंवाई थी ,

वो कल भी थे वो आज भी है

अस्तित्व उनका अमर रहेगा ।

SATWIK RAJ GARG

9 A

पिता जी का इंटरव्यू

सृजिका : आप का जन्म कब और कहां - हुआ था?

पिताजी : मेरा जन्म 24 मार्च को गांव में हुआ था।

सृजिका : आप कुल मिलाकर कितने भाई - बहन हैं?

पिताजी : हम कुल मिलाकर चार बहन एक - भाई है

सृजिका : क्या आप सबसे छोटे थे -, या सबसे बड़े थे?

पिताजी : मैं सबसे छोटा था। मेरी चार बड़ी बहन है।

सृजिका : क्या गांव में स्कूल हुआ - करती थी?

पिताजी : जिस गांव में मैं रहता था उस गांव में स्कूल नहीं थी। हमारे बगल के गांव में स्कूल हुआ करता था।

सृजिका : क्या स्कूल जाने में कठिनाइयां होती थी -?

पिताजी : कठिनाईयां होती थी क्योंकि हमें दूसरे गांव तक का सफर पैदल तय करना पड़ता था।

सृजिका: आगे की - पढ़ाई के लिए कहां गए थे?

पिताजी : आगे की पढ़ाई के लिए रांची गया था।

सृजिका : पढ़ाई में आपको किसका सहयोग अधिक मिला?

पिता जी : पढ़ाई में सहयोग पिताजी से मिला।

सृजिका : क्या बे बचपन में शैतान थे-?

पिताजी : मैं बहुत शैतान था। मुझे बहुत मार पड़ती थी।

सृजिका : बचपन में कौन से खेल खेलत थे?

पिताजी : बचपन में भागम–भाग, गिल्ली डंडा, छुपन–छुपाई खेलते थे।

सृजिका : जब आप रांची गए तो आपको गांव के मुकाबले शहर अच्छा लगा?

पिताजी : गांव के मुकाबले मुझे रांची पसंद आया।

सृजिका : रांची क्यों पसंद आया -, कुछ विशेषताएं?

पिताजी : मुझे रांची इसलिए पसंद था क्योंकि

रांची में आनेजाने की सुविधा भी थी-

रांची में हर चीज आसानी से मिल जाती थी

रांची में गांव से ज्यादा अच्छे मकान थे

रांची की सड़के भी बहुत अच्छी थी

सृजिका : आपकी जॉब कब लगी -?

पिताजी : मेरी जॉब 22 साल पर लग गई थी।

सृजिका : क्या जॉब लगने की खुशी थी -?

सृजिका : आपको किन चीजों में ज्यादा रुचि थी -?

पिताजी : मुझे फोटोग्राफी में ज्यादा रूचि थी।

सृजिका भट्ट ,**Class-X-B**

लघुकथा-:'अनसुनी बुराई'

एक बार स्वामी विवेकानंद रेल से सफर कर रहे थे। वह जिस डिब्बें में सफ़र कर रहे थे।उसी डिब्बे में कुछ अंग्रेज यात्री भी सफ़र कर रहे थे।उन अंग्रेजों को साधुओं से बहुत चिढ़ थी। वह साधुओं की भरपेट निंदा करते थे।वह साधुओं को बुरा भला कह रहे थे। उनकी सोच यह थी कि साधु अंग्रेजी नहीं जानते हैं और वह उनकी बात नहीं समझते होंगे। इसलिए अंग्रेजों ने आपसी बातचीत में साधुओं को बुरा कहा। हालांकि उन दिनों की हकीकत भी थी कि अंग्रेजी बोलने वाले साधु होते भी नहीं थे।

रास्ते में एक बड़ा स्टेशन आया। उस स्टेशन पर विवेकानंद के स्वागत में हजारों लोग उपस्थित थे, जिनमें विद्वान एवं अधिकारी भी थे। यहां उपस्थित लोगों को संबोधित करने के बाद अंग्रेजी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वामी जी अंग्रेजी में ही दे रहे थे। इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलते देखकर अंग्रेजों को मानो जैसे सांप ही सूंघ गया हो,जो रेल में उनकी बुराई कर रहे थे। अवसर मिलने के बाद विवेकानंद के पास आए और उनसे विनम्रता पूर्वक पूछाआपने हम लोगों की बात सुनी।-

और आपने बुरा माना होगा?

स्वामी जी ने सहज शालीनता से कहा मेरा मस्तिक अपने ही कार्यों में इतना व्यस्त था कि आप सभी लोगों की बात सुनी भी और उन पर ध्यान देने या बुरा मानने का अवसर ही नहीं मिला। विवेकानंद जी का यह जवाब सुनकर अंग्रेजों का मस्तिष्क शर्म से झुक गया और उन्होंने उनके चरणों में झुक कर शिष्यता स्वीकार कर ली।

क्हानी से सीख – हमें सदैव अपने लक्ष्य पर ध्यान देन चाहिए।

नाम–सृष्टि कुमारी

कक्षा दशम-'ब'

इंसानियत

एक बार की बात है किसी गाँव में एक पंडित रहता था| वैसे तो पंडित जी को वेदों और शास्त्रों का बहुत ज्ञान था लेकिन वह बहुत ग़रीब थे| ना ही रहने के लिए अच्छा घर था और ना ही अच्छे भोजन के लिए पैसे|एक छोटी सी झोपड़ी थी, उसी में रहते थे और भिक्षा माँगकर जो मिल जाता उसी से अपना जीवन यापन करते थे|एक बार वह पास के किसी गाँव में भिक्षा माँगने गये, उस समय उनके कपड़े बहुत गंदे थे और काफ़ी जगह से फट भी गये थे|

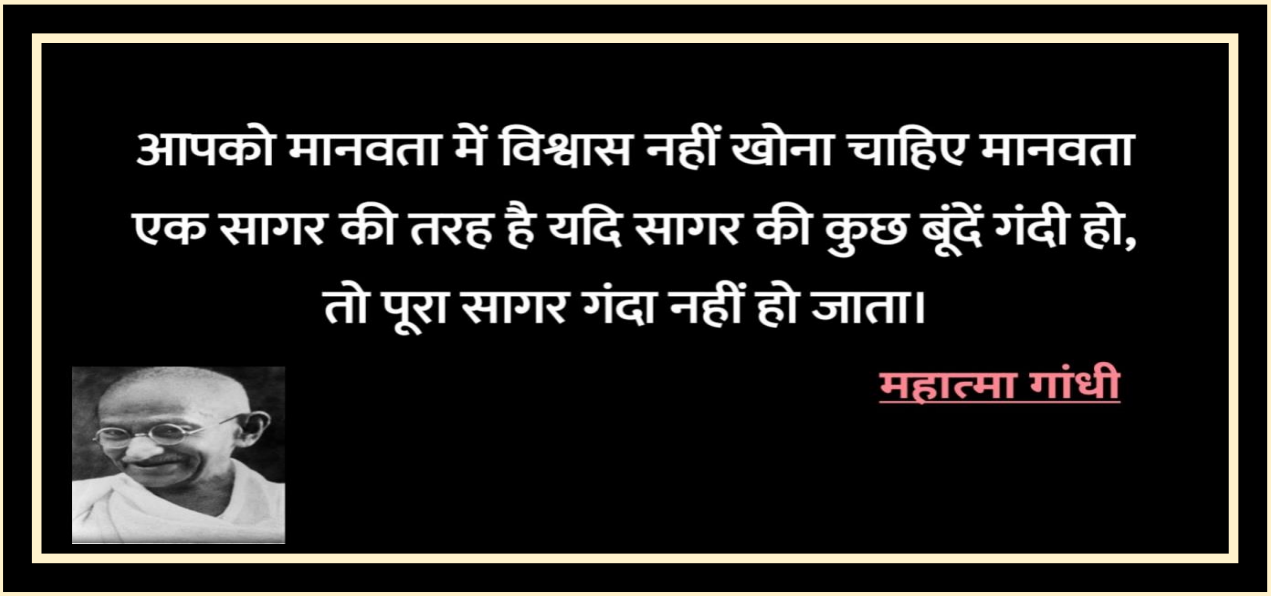

जब उन्होने एक घर का दरवाजा खटखटाया तो सामने से एक व्यक्ति बाहर आया, उसने जब पंडित को फटे चिथड़े कपड़ों में देखा तो उसका मन घ्रणा से भर गया और उसने पंडित को धक्के मारकर घर से निकाल दिया, बोला गंदा पागल चला आया है पता नहीं कहाँ से। पंडित दुखी मन से वापस चला आया, जब अपने घर वापस लौट रहा था तो किसी अमीर आदमी की नज़र पंडित के फटे कपड़ों पर पड़ी तो उसने दया दिखाई और पंडित को पहनने के लिए नये कपड़े दे दिए|

अगले दिन पंडित फिर से उसी गाँव में उसी व्यक्ति के पास भिक्षा माँगने गया| व्यक्ति ने नये कपड़ों में पंडित को देखा और हाथ जोड़कर पंडित को अंदर बुलाया और बड़े आदर के साथ थाली में बहुत सारे व्यंजन खाने को दिए| पंडित जी ने एक भी टुकड़ा अपने मुँह में नहीं डाला और सारा खाना धीरे धीरे अपने कपड़ों पर डालने लगे और बोलेले खा और खा -|

व्यक्ति ये सब बड़े आश्चर्य से देख रहा था, आख़िर उसने पूछ ही लिया कि पंडित जी आप यह - क्या कर रहे हैं सारा खाना अपने कपड़ों पर क्यूँ डाल रहे हैं|

पंडित जी ने बहुत शानदार उत्तर दिया -क्योंकि तुमने ये खाना मुझे नहीं बल्कि इन कपड़ों को दिया है इसीलिए मैं ये खाना इन कपड़ों को ही खिला रहा हूँ, कल जब में गंदे कपड़ों में तुम्हारे घर आया तो तुमने धक्के मारकर घर से निकाल दिया और आज तुमने मुझे साफ और नये कपड़ों में देखकर अच्छा खाना पेश किया| असल में तुमने ये खाना मुझे नहीं, इन कपड़ों को ही दिया है, वह व्यक्ति यह सुनकर बहुत दुखी हुआ|

मित्रों, किसी व्यक्ति की महानता उसके चरित्र और ज्ञान पर निर्भर करती हैं पहनावे पर नहीं| अच्छे कपड़े और गहने पहनने से इंसान महान नहीं बनता उसके लिए अच्छे कर्मों की ज़रूरत होती है| यही इस कहानी की प्रेरणा है|

Suhani, Class-9th B

लॉकडाउन में भारत

आज पूरा विश्व इस कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ रहा हैं। इस खतरनाक वायरस ने कई लाख लोगों की जान ले ली और अभी इसकी तादाद बढ़ रही हैं। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इसके खिलाफ बहुत जल्दी निर्णय लिया और देश में संपूर्ण लॉकडाउन लगाया। हमारे देश में जब केवल 700 कोरोना मरीज़ थे तभी मोदी जी ने लॉकडॉउन लगा दिया क्योंकि वह यह बात जानते थे कि आगे चलकर ये वायरस कितना खतरनाक साबित हो सकता हैं। लेकिन कुछ लोग अभी भी घरों से बाहर निकाल रहें और नियमों का उल्लंघन के रहें हैं और देश में कोरोना मरीज़ की संख्या बढ़ाने में मदद कर रहें हैं जिसके कारण वर्ष आज हमारे देश में लगभग 10,000 कोरोना मरीज़ प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। आज अमेरिका इटली जैसे देशों ने भी इस वायरस के सामने हार चुके हैं और उनके देशों में लगभग 70 से 80 लाख कोरोना के मरीज़ हैं और वो दिन भी दूर नहीं जब उन देशों के साथ भारत भी गिना जा सकता हैं। और ऐसा भी मैं नहीं कह रहा कि हम इस महामारी से बच नहीं सकते बस कुछ चीजों का हमें ध्यान रखना होगा और हमारा देश कोराना से मुक्त हो जाएगा। इसके लिए हमने अपने हाथों को बारबार साबुन से अच्छे से धोना होगा-,लोगों 2 गज की दूरी बनाकर रखनी होगी, और अपनी इम्यूनिटी स्ट्रांग करनी होगी। अगर इस वायरस को हरा दिया दुनिया में हम ये साबित कर देंगे की भारत केवल युद्ध में ही नहीं बल्कि सभी चीजों में किसी भी देश को हरा सकता हैं।

अतः घर में रहें सुरक्षित रहें।

Shwetanshu Chauhan, Class-IX-A

मन की बात

कोरोना के कारण मार्च से स्कूल बंद है| बाजार भी पूर्णतः बंद थे पर अब सीमित समय के लिए बाजार खुल रहे हैं| हम बच्चे घरों में कैद हैं बाहर से जंक फूड फास्ट फूड सख्त मना है| मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मैं जंक फूड और फास्ट फूड नहीं खाता हूं| मन करता है तो घर में बनवा कर खा लेते हैं| हां एक बात और है मेरे घर में कभी कभी कुछ खास पकवान और मिठाइयां बना-ली जाती हैं इसलिए मुझे प्रायः बाहर की खाना खाने को मन ही नहीं करता| इस कोरोना महामारी में इन चीजों को लेकर कोई परेशानी नहीं है रही बात पढ़ाई लिखाई होने की निसंदेह यह गंभीर चिंता का विषय है कि हमारे स्कूल कब खुलेंगे? हमें अपने शिक्षकों से आमने –सामने ज्ञान प्राप्त

करने का मौका कब मिलेगा। भला शिक्षकों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के बिना हमारा सार्वभौमिक विकास कैसे होगा? क्या ऑनलाइन पढ़ाई के माध्यम से समुचित विकास संभव है? मुझे दुख है कि हमारे विद्यालय कई माह से बंद है और निकट भविष्य में विद्यालय खुलने की संभावना कम है। कोरोना महामारी ने सब को घरों में कैद रहने पर विवश कर दिया है। बच्चो ऑनलाइन क्लास से सिलेबस पूरा कर रहे हैं हमें कहीं टॉपिक पर ऐसा महसूस होता है कि हमोर शिक्षकों के बिना यह विषय वस्तु समझ में नहीं आएगा फिर भी हम ऑनलाइन माध्यम से क्लास कर रहे हैं। मैं दशम् वर्ग का विद्यार्थी हूं अगले वर्ष मार्च महीने में होने वाली बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं। जब से स्कूल बंद हुआ है मैं कई पेंटिंग बनाई है और घर में अपने छोटे भाई को भी मैंने ट्यूशन दिया है लेकिन मुझे तो अपने परीक्षा की तैयारी हेतु विद्यालय के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन की जरूरत महसूस हो रही है। कोरोना संकट जल्द खत्म हो जाए ताकि हमारा स्कूल जल्द खुल जाए और हम फिर से अपने विद्यालय जा सके। मुझे मेरे विद्यालय की बहुत याद आती है।

विक्की राज , XB

माँ

आँखें खोलू तो मेरी माँ मेरे पास हो,

आँखें बंद करू तो माँ का अहसास हो

मैं मर भी जाऊँ तो कोई गम नहीं

मेरो कफन पर आँचल मेरी माँ का हो।

माँ तुम सब से प्यारी हो,

इस जग में सब से न्यारी हो।

तेरे चरणों में हैं दुनियां सजी,

दिल मे तेरी मुश्कान बसी।

तेरी हर एक डांट याद है मुझे,

समेट रखा हूँ अपनी यादों में।

गोद में तेरे सो जाऊँ

अपना बचपन वापस ले आऊं।

Name- Simi Singh

Class-Xth A

अगर बचना है कोरोना से

अगर बचना है कोरोना से
तो रहना होगा घर में
क्या मिलेगा तुमको, घूम कर शहर में।

अगर बचना है कोरोना से,
तो धोते रहो हाथ,
वरना चले जाओगे छोड़कर, तुम हमारा साथ।

अगर बचना है कोरोना से
तो पहन के रहो मास्क
वरना चले जाओगे छोड़कर तुम जिन्दगी का साथ।

अगर जितना है कोरोना से
तो दो मोदी जी का साथ
राहुल गांधी, सोनिया गांधी नहीं
कर पाएंगे तुमको इस कोरोना से आजाद।

सब साथ में रहे घर में बंद
ले ना कोई टंशन
अगर इतना ही शौख है घूमने का
तो ए! मेरे दोस्त जाके देख लंदन।।

हर्षित सिंह

प्यारे पापा

पापा हर फर्ज निभाते है।
जीवन भर कर्ज चुकाते है
बच्चे की एक खुशी के लिए
अपने सुख भूल ही जाते है।
फिर क्यों ऐसे पापा के लिए
बच्चे कुछ कर नहीं पाते है
ऐसे सच्चे पापा को क्यों
पापा कहने में सकुचाते है
पापा का आशीष बनता है
बच्चों का जीवन सुखदाई
पर बच्चें भूल ही जाते है
यह कैसी आंधी है आई,
जिसने सब कुछ सिखलाया है,
कोटि नमन ऐसे पापा को
जो हर पल साथ निभाया है
प्यारे पापा के प्यार भरे
सीने से जो लग जाते है
सच कहती हूँ विश्वास करो
जीवन में सदा सुख पाते है।

Name- Srijika Bhatt

Class – 10th B

कोरोना महामारी

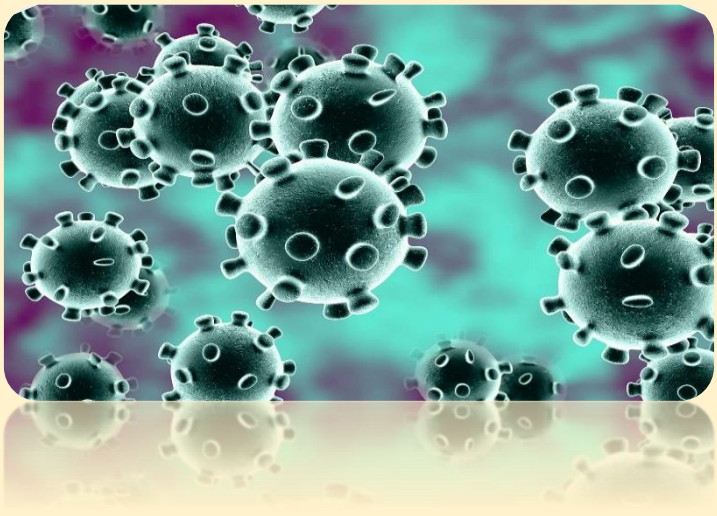

कितने खौफनाक मंजर हैं,
यहाँ तबाही के
फंसी हुई है दुनिया सारी,
चारों ओर महामारी है।
कैसा खौफनाक मंजर है
गलियां सूनी, सड़कें सूनी
रमें हुए है अपने ही घर
खुद ही खुद सब लगाके धूनी
दुकानों पर माल नहीं हैं
कैसी तो यह लाचारी है
चारों ओर महामारी है।
वायरस चूस रहे हैं
इंसानों का संचित जीवनरस
मास्क पहन कर धूम रहे है हम
देखो किस–किस की बारी है,
चारों ओर महामारी है।

नाम – अनन्या
वर्ग– 8 'अ'

माँ

जब आँख खुली तो माँ की
गोद का सहारा था।
उनका नन्हा सा आंचल मुझको
मेरी जान से भी प्यारा था।
मेरे चेहरे की झलक देख
उनका चेहरा फूलों सा खिलता था।
मेरी एक मुस्कान देख
उनको जीवन मिलता था।
उंगली को पकड़ कर चलाया था
पठने विद्यालय भेजा था।
मेरी हर गलती को माफ कर
मुझे सीने से लगाया था।
अपने सपनों का महल गिरा कर
मेरे सपनों को सजाया था।
वह माँ की दुआ से, आज
वक्त तो क्या, मेरा नसीब भी बदला था।

Name- Kajal

Class-Xth A

संस्कृत विभाग

छात्रजीवने

भाविजीवने सुखार्थमेव छात्रजीवने परिश्रमः क्रियते। छात्रैः नियमितं भोजनं भक्षणीयम्, नियतं च व्यायामेन शरीर पोषणीयम् आलस्यं त्यक्त्वा अध्ययनं कर्तव्यम्। तेन शोभनविचारमयानि पुस्तकानि पठितव्यानि, शोभनविचारमयानि नाटकानि चित्राणि च द्रष्टव्यानि, शोभनविचारमयानि गीतानि श्रोतव्यानि गातव्यानि च। अनेन चित्तशुद्धिर्भवति चित्तं च कार्यात् न विचलति। अतएव छात्रस्य सुवर्णावसरस्य सदुपयोगः कर्तव्यो न च नाशयितव्यः कालः। यद्यस्मिन् काले छात्राः संयमेन, तपसा, परिश्रमेण नियमपूर्वकं कार्यं कुर्वन्ति, सत्यमाचरणं कुर्वन्ति, गुरूणामादरं कुर्वन्ति, आलस्यं च त्यजन्ति तदा सकले जीवने ते कदापि विफला न भविष्यन्ति। नायं कालः सुखमुपभोक्तुम्। केवलं सुखमिच्छता परिश्रमेण विना विद्या न लभ्यते सर्वविधो विकासश्च न भवति। अत एवोच्यते–

सुखार्थी चेत्त्यजेद्विद्या विद्यार्थी चेत्त्यजेत् सुखम।

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।।

प्रिया रघुवंशी

षष्ठ "अ"

श्लोक

1. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
   चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।

   अर्थः– जो व्यक्ति अपने माता पिता को नित्य प्रणाम करता है तथा बड़े बुढ़ो की सेवा करता है, उसे व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल ये चार अपने आप बढ़ती है।

2. यं मातापित्रौ क्लेशं सहेते समभ्वे नृणाम्।
   न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि।।

अर्थः– मनुष्य के जन्म के समय जो कष्ट माता पिता सहते है, उसे कष्ट का प्रतिफल सौ वर्षों में भी नहीं चुकाया जा सकता।

3. तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सवर्दा।
तेष्वेव त्रीषू तुष्टषु तपः सर्वं समाप्यते।।

अर्थः– उन दोनों (माता–पिता) तथा गुरू का सदैव प्रिय करना चाहिए। उन तीनों के संतुष्ट होने पर हमारी सभी तपस्याओं पर समाप्त हो जाती है। अर्थात् हमें हमारी सभी तपस्याओं का फल मिल जाता है।

कोमल कुमारी
अष्टम 'ब'

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्ये कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति गर्दभी।।

अदिति कुमारी
अष्टम 'ब'

संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणचेतना

संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणचेतनेति प्रस्तुत विषयो विद्यते।वाक्यार्थज्ञानं प्रति पदार्थज्ञानस्य कारणतया संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणचेतनेति वाक्यार्थज्ञानं प्रति का नाम चेतना किं नाम संस्कृतसाहित्यं इति जिज्ञासा सुतरां श्रोतृजनमनसि उदिता भवति।

पर्यावरण नाम उक्तग्रन्थेषु प्रतिपाद्यविषये पर्यालोचनरूपेण सम्यक् ज्ञानं सम्पादनं चेतनात्व नाम् अनुभूतिकरणम्।उपलब्धसंस्कृतवाङमये पर्यावरणज्ञानं नाम विषयस्य परिज्ञानमित्येव संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणचेतना इति निबन्ध-शीर्षकस्य अर्थः अनुभूयते मया।

वेदार्थधर्मस्य यज्ञदानं-तपः-कर्मणः सम्यक्तया संसाधनं तदा भवति यदा देवता-द्रव्याङ्गोपाङ्गविधिपूर्वकप्रयोगो भवति।साङ्गोपाङ्ग-यागाख्य-धर्मानुष्ठानेन प्रयोजनसिद्धिप्रतिपादनात् वेदार्थं धर्मार्थं यागविधेङ्गपरितः रक्षणमेव पर्यावरणं वेदेषु प्रतिपादिता रमाख्या यागक्रिया तस्याः एकेनापि अङ्गेन न्यूनता भविष्यति तदा अङ्गहीनत्वेन अविधिपूर्वकत्वात् फलशून्यतया विध्यात्मकपर्यावरणखण्डितत्वेन विकृतेति ज्ञायते।अर्थात् साङ्गोपाङ्गयागक्रिया दानक्रिया तपःक्रिया सम्यक् अनुष्ठिता सति पर्यावरणभूषितेति।मन्यतां केनचित् अङ्गेन न्यूनाधिक्यतां गता पर्यावरणदूषिता सती।फलशून्या प्रतिकूलफल-दायिनी वा इति अनुभूयताम्।

एवं वेदस्य शिरोभागो वेदान्तः, तत्र पञ्च-भौतिकास्थूलजगतः जागद अवस्थावतः पञ्चज्ञाने-द्रिय-पञ्चकमेंन्द्रिय-पञ्चप्राण-मनोबुद्धयात्मक-स्वप्ना-वस्थावत् सूक्ष्मशरीरजगतः मूलप्रकृतिरूप ईश्चरेच्छादिकारणात्मकस्य मायास्वरूपस्य चैतन्यो-पाधिस्वरूपस्य यत् उपपादनं विशालरूपेण उप-लभ्यते।तत्र आनन्दमय-विज्ञानमय-मनोमय-प्राणमयात्रमयाख्यकोषचतुष्टयप्रतिपादनं दृश्यते।तत्र समष्टिजगतः व्यष्टिजगतः पर्यावरणंस्वरूपं कोषचतुष्टयरूपेण सुसम्यक् अनुभूयते।एतेषां चतुर्णां कोषानां व्यष्टिरूपेण भौतिकाध्यात्मिक-साधनेन अर्थात् सामदानादिना अन्नपानादिना च साधनेन रक्षायां सत्यां प्रत्येकमानवः शरीरेण मनसा बुद्धया च स्वस्थो भविष्यति।एवञ्च भौतिक-समष्टि-जगतः पृथिवी जलाशयः वनप्रभृति-प्राकृतानां स्थूलपदार्थानां संरक्षणमेव समष्टिकोषचतुष्टय-पर्यावरणाख्यस्य सम्यक् सुसंरक्षणं भविष्यति।

पर्यावरणशब्दार्थः परितः आवरणम्, अर्थात् सर्वतः धारणमेव कोषशब्दस्यापि अर्थः कोषवत् आच्छादकम् अतः यत् कोषचतुष्टयं वेदान्तशास्त्रे प्रतिपादितं यदाश्रितः सन् अयमात्मा सर्वमनुभवति।तदैव कोषचतुष्टयं पर्यावरणं वक्तुं शक्यते।तस्य सम्यक् रक्षणं भुक्ति-मुक्तिदायकं समीचीनम्।

।।जयतु संस्कृतम्।।

श्रुति जायसवाल, टी जी टी संस्कृत।

Art Corner

KALI KUMARI VIII A
ISHANI KUMARI VI A
PRIYANSHU KUMARI VII B
HARSHIT RAJ VI A

ARYAN RAJ VI A
Simi Singh XA
SONALI VII A

SONALI VII A

KHUSHI KUMARI X A

SAKSHI KUMARI VI A

RITIK ROSHAN VII B

STAY HOME
STAY HEALTHY
OME STEPS TO FIGHT AGAINST CORONA
WASH YOUR HAND
CLOSE YOUR MOUTH
AVOID CROWDING
DON'T TOUCH

AYUSHI

DOCTOR

Stay At Home
Stay Safe

NAMAN KUMAR VII B

KHUSI KUMARI VI

DEMO WORK IN LOCKDOWN BY TGT (AE)

ONLINE TEACHING DURING PANDEMIC

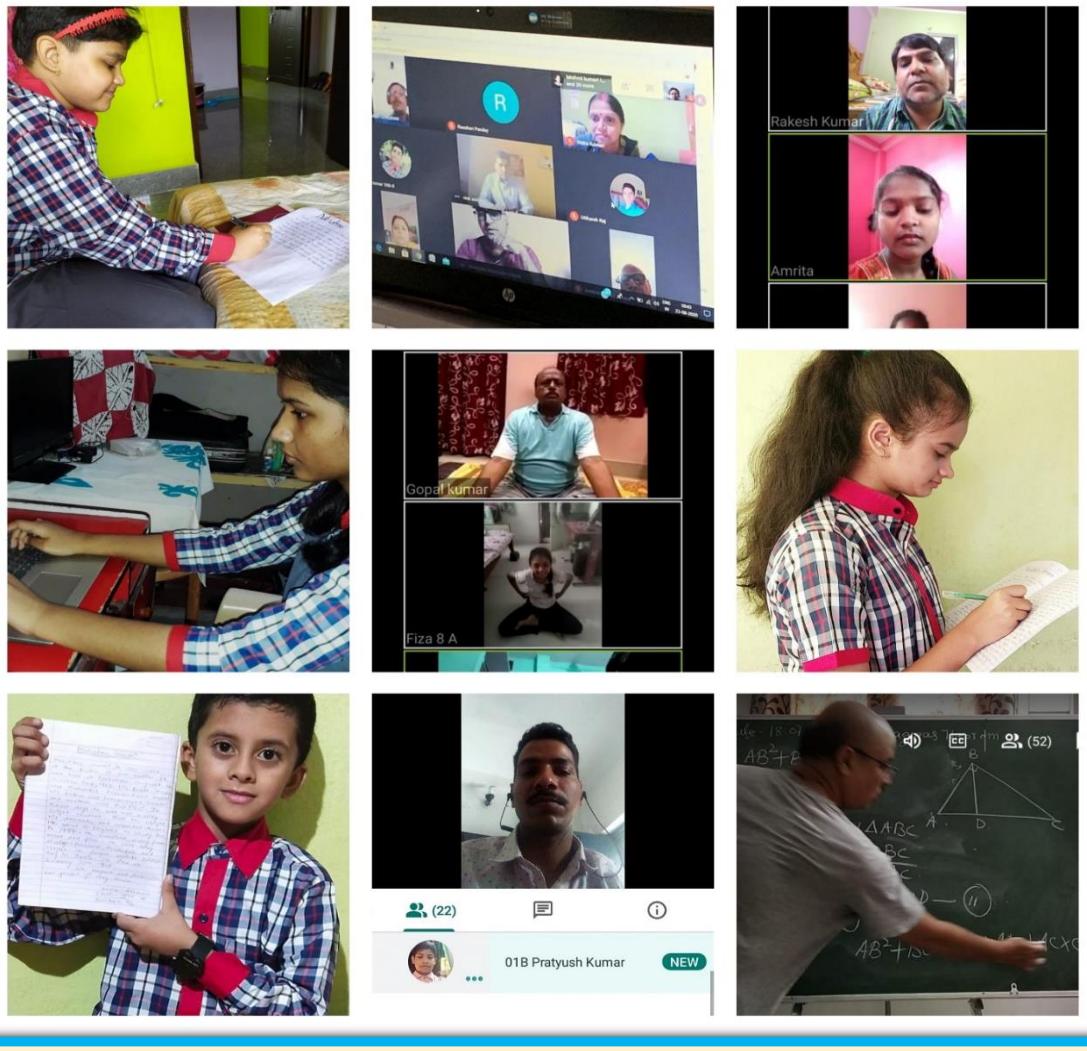

Online PTM

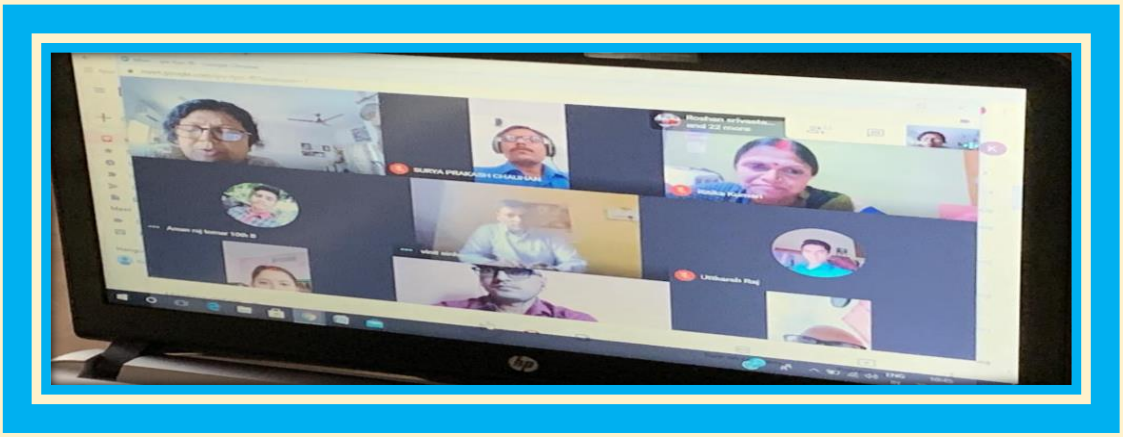

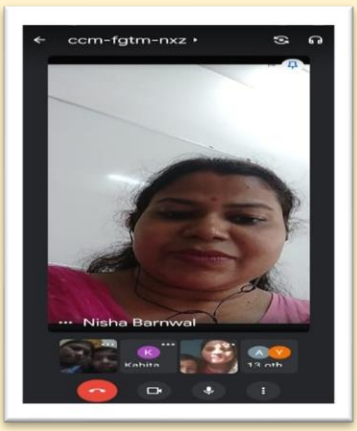
ccm-fgtm-nxz
Nisha Barnwal

hgc-iwga-eah
RIDHIKA RAJ joined
16 others

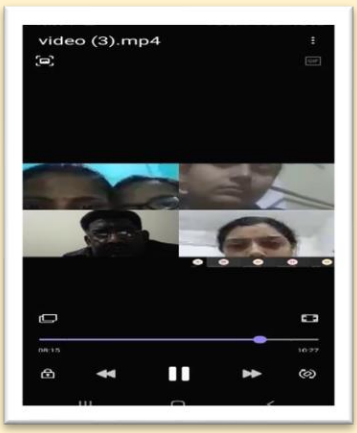
video (3).mp4

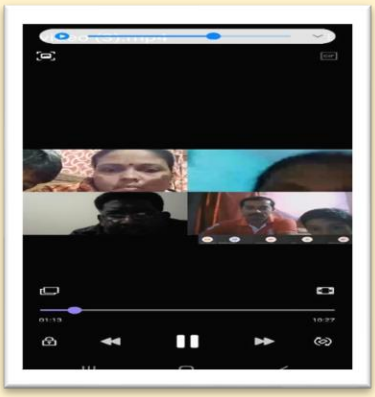

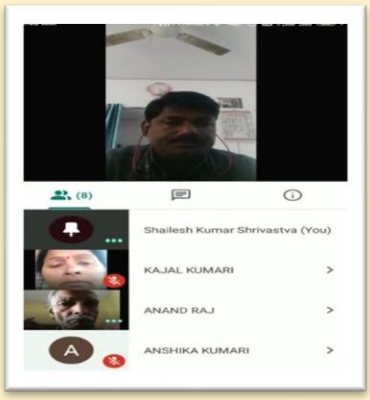
(8)
Shailesh Kumar Shrivastva (You)
KAJAL KUMARI
ANAND RAJ
ANSHIKA KUMARI

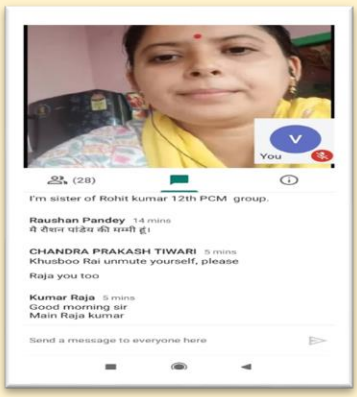
You
(28)
I'm sister of Rohit kumar 12th PCM group.
Raushan Pandey 14 mins
मै रौशन पांडेय की मम्मी हूं।
CHANDRA PRAKASH TIWARI 5 mins
Khusboo Rai unmute yourself, please
Raja you too
Kumar Raja 5 mins
Good morning sir
Main Raja kumar
Send a message to everyone here

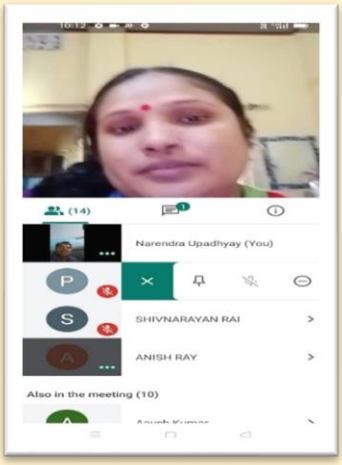
(14)
Narendra Upadhyay (You)
SHIVNARAYAN RAI
ANISH RAY
Also in the meeting (10)

(24)
Ritika Kumari
Rohit Rajvardh
Sandhya Kumari 10th B
SURYA PRAKASH CHAUH...
Tanishk Mishra
NEW

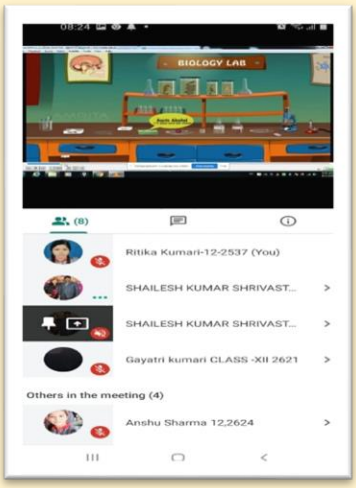
BIOLOGY LAB
(8)
Ritika Kumari-12-2537 (You)
SHAILESH KUMAR SHRIVAST...
SHAILESH KUMAR SHRIVAST...
Gayatri kumari CLASS -XII 2621
Others in the meeting (4)
Anshu Sharma 12,2624

Online Celebration of Teacher's Day

Offline Teaching with Social Distancing

Press Release

बच्चों पर अधिक महत्वाकांक्षा न लादें अभिभावक : डीएम

सहारा न्यूज ब्यूरो
आरा।

केंद्रीय विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष सह जिला पदाधिकारी रोशन कुशवाहा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला पदाधिकारी श्री कुशवाहा डीडीसी अंशुल अग्रवाल और श्रीमती शिवानी सिंह ने संयुक्त रूप से किया।

प्राचार्य डॉ सीमा प्रधान ने स्वागत करते हुए विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पेश की। जिसमें बताया गया कि विद्यालय निरंतर विकासउन्मुख है और नई उपलब्धियों को प्राप्त कर रहा है। एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रतियोगिता के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय के 13 बच्चों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराना, शैक्षणिक स्तर बोर्ड परिणाम में 100% रिजल्ट व इस विद्यालय के छात्र रोहित राज जिला टॉपर बनने के साथ ही विद्यालय में लैंग्वेज लैब के द्वारा बच्चों में अंग्रेजी बोलने का प्रशिक्षण एक अपने आप में मिसाल है। बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति में कई कार्यक्रम प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि जिला पदाधिकारी श्री कुशवाहा ने कहा कि विद्यालय के प्रतिभाशाली बच्चों को देखकर उन्हें अपने बचपन की यादें तरोताजा हो गई। उन्होंने उपस्थित अभिभावकों को यह संदेश दिया कि माता-पिता अपने बच्चों के ऊपर अधिक महत्वाकांक्षा नहीं लादें, कि बचपन की बेल यूं ही सूख जाए। इस बचपन को यूंही झूमते सहेजने हेतु विद्यालय प्रबंध के साथ तन्मयता से खड़े होने व विद्यालय को और अधिक सुविधाएं जुटाने में हर संभव सहयोग हेतु आश्वासन दिया। श्रीमती शिवानी सिंह एवं डीडीसी अंशुल अग्रवाल ने सत्र के विजेताओं एवं विशिष्ट उपलब्धि वाले बच्चों और शिक्षकों को सम्मानित किया। डीडीसी श्री अग्रवाल ने बच्चों के कार्यक्रम की तारीफ करते हुए विद्यालय को साधुवाद दिया कि बच्चों के चारित्रिक विकास एवं व्यक्तित्व में तरह-तरह के अवसर देता है। कार्यक्रम के दौरान 200 बच्चों ने नृत्य, नाटिका, गायन और शास्त्रीय नृत्य के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। डा प्रधान ने कहा कि ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति बच्चों के मनोबल को बढ़ाते हैं साथ ही साथ उनमें आत्मविश्वास पैदा करते हैं जो जीवन संघर्ष और प्रतिस्पर्धा के माहौल में बच्चों को मजबूत बनाते हैं। कार्यक्रम में प्रो वीरेंद्र प्रसाद, डॉ विजय श्री, माउंट लिट्रा, आरएनएस, डीपीएस और ज्ञान ज्योति के प्राचार्य और डायरेक्टर भी उपस्थित थे।

केंद्रीय विद्यालय के वार्षिकोत्सव में छात्रा को सम्मानित करते डीएम रोशन कुशवाहा व अतिथि।

केंद्रीय विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह

जीवन में पढ़ाई के साथ खेल भी आवश्यक : शशांक

आरा (एसएनबी)। केंद्रीय विद्यालय आरा का वार्षिकोत्सव खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन उपविकास आयुक्त शशांक शुभंकर ने किया। इस अवसर पर श्री शुभंकर ने कहा कि जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी आवश्यक है।

क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मष्तिस्क का वास होता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में कुछ करने के लिए स्वस्थ रहना आवश्यक है। छात्र वीर विक्रम सिंह मशाल लेकर दौड़ शुरु किया, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दक्षिण कोरिया में सॉफ्ट टेनिस खेल में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। क्रीड़ा शिक्षक गोपाल कुमार के नेतृत्व में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें प्राथमिक स्तर पर गुलाब दौड़ में आदित्य कुमार, रौनक, चॉकलेट दौड़ में आदित्य कुमार, अविनाश कुमार विद्यालय चलो प्रतियोगिता में आदित्य सिंह, आद्या कुमारी, बोरी दौड़ में सन्या, निशा कुमारी क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान पर रही। जबकि माध्यमिक स्तर पर 100 मीटर दौड़ के बालक वर्ग में मनीष कुमार, नंदन कुमार, बालिका वर्ग में अंचला कुमारी, सुनीता कुमारी अन्य प्रतियोगिताओं में अनामिका, निकिता, अमृता, आराधना क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त की।

कार्यक्रम में प्राचार्य सीमा प्रधान ने कहा कि अपने क्षेत्र में सफल व्यक्तियों की उपस्थिति से प्रतियोगियों का हौसला आफजाई होता है। उन्होंने कहा कि खेल जीत के साथ हारना सिखाती है क्योंकि हार के बाद जीत के प्रति आकर्षण और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयास के प्रति समर्पण की जरुरत पड़ती है। मौके पर डॉ. एस.के.रूंगटा, वीरेंद्र यादव, रितेश चौरसिया, सीपी तिवारी, देवी प्रसाद, एस.पी. चौहान, बी.पी. गुप्ता, सूर्यकांत सिंह, मनोज कुमार सिंह, भगवान गुप्ता आदि शामिल थे।

मशाल जलाते डीडीसी शशांक शुभंकर व अन्य।

वार्षिकोत्सव : सांसें हो रहीं कम, आओ वृक्ष लगायें हम..

आरा | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

शहर के ज़ीरो माइल स्थित केंद्रीय विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। उद्घाटन विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष सह डीएम रोशन कुशवाहा, विशिष्ट अतिथि शिवानी सिंह, डीडीसी अंशुल अग्रवाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

सांसें हो रहीं कम, आओ वृक्ष लगायें हम...स्वच्छता का इरादा कर लिया हमने...और खान-पान में हरी सब्जियों के महत्व के थीम पर बच्चों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से स्वच्छता, पौधरोपण व जंक फूड छोड़ने का संदेश दिया गया। इसके अलावा पेरेंट्स ...ग, राजस्थानी नृत्य और भांगड़ा की प्रस्तुति से ...डाल झूम उठा। संचालन नौवीं के छात्र खलफ जमाल व छठी की छात्रा प्रतिष्ठा ने मनमोहक अंदाज में किया।

प्राचार्या ने प्रस्तुत की वार्षिक रिपोर्ट : विद्यालय की प्राचार्या डॉ सीमा प्रधान ने अतिथियों के स्वागत के बाद वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रतियोगिता के तहत केंद्रीय विद्यालय के 13 बच्चों ने राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराया। खेलकूद में राष्ट्रीय स्तर पर पांच बच्चों को स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक मिला व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सॉफ्ट टेनिस में परचम लहराया। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता स्पॉट में केंद्रीय विद्यालय आरा के दो बच्चों का चयन, स्काउट व गाइड में दो बच्चों को राज्य स्तर पर सम्मानित होना है। बोर्ड के रिजल्ट में सौ फीसदी रिजल्ट व विद्यालय के छात्र रोहित राज जिला टॉपर हुआ। विद्यालय में लैंग्वेज लैब द्वारा बच्चों में अंग्रेजी बोलने व सुनने की ट्रेनिंग सहित अन्य उपलब्धियों को रखा गया।

विद्यालय के सौ बच्चों को किया गया पुरस्कृत : अतिथियों ने सत्र के विजेताओं, विशिष्ट उपलब्धियों वाले बच्चों व शिक्षकों को सम्मानित किया। वार्षिकोत्सव में लगभग दो सौ बच्चों ने नृत्य, नाटिका, गायन व शास्त्रीय नृत्य में प्रस्तुति दी व लगभग सौ बच्चों को अतिथियों ने पुरस्... किया। मौके पर विवि के प्रो वीरेंद्र ... शिवपरसन सिंह, महिला कॉलेज की ... विजयश्री, माउंट लिटरा, आरएनएस डीपी... ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय के प्राच... डायरेक्टर मौजूद थे।

आरा केंद्रीय विद्यालय में विद्यार्थी को सम्मानित करते डीएम व अन्य। • हिन्दुस्तान

केन्द्रीय विद्यालय के वार्षिकोत्सव में हरी सब्जियों का महत्व दिखाया गया

पटना, शुक्रवार, 20 दिसंबर, 2019 | 18

सिटी रिपोर्टर | आरा

केंद्रीय विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह धूमधाम से मनाया गया। शुभारंभ डीएम सह विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष रोशन कुशवाहा, डीडीसी अंशुल अग्रवाल, शिवानी सिंह व प्राचार्य डा सीमा प्रधान ने किया। संबोधित करते डीएम रोशन कुशवाहा ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य है। अच्छी शिक्षा देना शिक्षक, शिक्षिका व अभिभावकों की जिम्मेवारी है। इस विद्यालय के प्रतिभाशाली बच्चो को देखकर उन्हें अपने बचपन की यादें तरोताजा हो गई। डीडीसी अंशुल अग्रवाल ने कहा कि जिस तरह से बच्चे इतने अच्छे सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रस्तुत किया है। वह काबिले तारीफ है। इन बच्चों में काबिलियत बहुत है, सिर्फ इन्हे निखारने की जरूरत है। मौके पर छात्र व छात्राओं ने सांसे हो रही कम, आओं वृक्ष लगाये हम, स्वच्छता का इरादा कर लिया हमने और खान-पान में हरी सब्जियों के महत्व के थीम पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। विद्यालय की प्राचार्या डा सीमा प्रधान ने कहा कि यह विद्यालय निरंतर विकासोन्मुख है और नई उपलब्धियों को प्राप्त कर रहा है। मौके पर 200 बच्चों ने नृत्य, नाटिका, गायन व शास्त्रीय नृत्य के द्वारा अपनी प्रस्तुती दी व लगभग 100 बच्चों को डीएम, डीडीसी ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर वीकेएसयू के प्रोफेसर बिरेन्द्र प्रसाद, शिवपरसन सिंह, महिला कॉलेज की डा विजयश्री, ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय, माउंट लिट्रा, आरएनएन व डीपीएस के निदेशक व प्राचार्य मौजूद थे।

आरा-केन्द्रीय विद्यालय के वार्षिकोत्सव में बच्चों को पुरस्कृत करते डीएम

केंद्रीय विद्यालय का रिजल्ट शत-प्रतिशत

इधर, आरा केंद्रीय विद्यालय का भी रिजल्ट शत-प्रतिशत है। विद्यालय से 12वीं परीक्षा में कुल 25 विद्यार्थी शामिल हुए थे। इसमें सभी विद्यार्थी पास हैं। विद्यालय प्रबंधन के अनुसार गोविंद नारायण कुमार सिंह ने 443 अंक के साथ पहले स्थान पर हैं, जबकि दूसरे स्थान पर आराधना के 434 अंक और तीसरे स्थान पर ऋतिक राज के 414 अंक हैं। हालांकि इस विद्यालय में फिजिकल एजुकेशन की परीक्षा नहीं ली गयी है। बिना इस परीक्षा के ही रिजल्ट जारी हुआ है।

राष्ट्रीय स्तर पर खेलेंगे केवि के 19 खिलाड़ी

आरा | निज संवाददाता

खेलकूद

- पांच बालिका खिलाड़ियों का भी हुआ चयन
- योगा में सुहानी और अर्चना करेंगी प्रदर्शन

शहर के समीप जीरो माइल स्थित केन्द्रीय विद्यालय में संभागीय स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के 46 बच्चों ने भाग ले अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के विभिन्न मैचों में 19 खिलाड़ियों ने शानदार खेल का प्रदर्शन कर अपने-अपने वर्ग में विपक्षी टीम के खिलाड़ियों का हरा दिया।

विजेता खिलाड़ी अब राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेंगे। स्कूल से राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होने वालों में खो-खो से तीन खिलाड़ी मनीष कुमार, रवि शंकर सिंह व रवि कुमार शामिल हैं। योगा से सात खिलाड़ी अशुतोष पांडेय, अमित कुमार सिंह, अंकित कुमार, अविनाश कुमार, सक्षम कश्यप, सुहानी कुमारी व अर्चना पांडेय शामिल हैं। लॉन टेनिस में दो खिलाड़ी वीर विक्रम व कुमार अचिंत्य शामिल हैं। टेबल टेनिस में मात्र एक खिलाड़ी संजीव कुमार का और रोप स्कीपिंग में छह उम्दा प्रदर्शन करने वालों का चयन हुआ है। पीयूष कुमार सिंह, राज कुमार सिंह, अंशु प्रिया, सृष्टि प्रिया, अनुष्का व कशिश का चयन हुआ है।

आरा केंद्रीय विद्यालय में विजयी खिलाड़ियों को मेडल पहनाती प्राचार्य।

अगलगी में लाखों की संपत्ति जली

ट्रेन हादसे के बाद आरा में भी अप

दैनिक भास्कर | आरा Page 1

आयोजन • केन्द्रीय विद्यालय में किशोर अवस्था की धारणा विषय पर हुई संगोष्ठी

नासमझी के कारण दुर्गुणों अपनाते हैं किशोर दोस्ताना व्यवहार कर काउंसिलिंग करें पैरेंट्स

सिटी रिपोर्टर | आरा

केंद्रीय विद्यालय में किशोर अवस्था के बच्चों के मन में होने वाले गलत धारणाओं को निवारण के लिए काउंसिलिंग पर आधारित संगोष्ठी हुई। महिला चिकित्सक डॉ.सविता रुंगटा, शिशु विशेषज्ञ डॉ.मधुकर प्रकाश एवं साइकोलॉजिस्ट काउंसलर प्रोफेसर लतिका वर्मा को आमंत्रित किया गया था।

कक्षा- सातवीं से बारहवीं तक छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग कक्ष में गोष्ठी आयोजित की गई। स्वागत संबोधन में प्राचार्य डॉ. सीमा प्रधान ने कहा कि किशोरावस्था में बच्चों को उलझन और गलत धारणाओं में फंसने से उनका शरीर और मन स्वस्थ दिशा में अग्रसर नहीं हो पाता है। इसी संधि-समय में किशोर कई गुणों और दुर्गुणों को ग्रहण कर लेते हैं और फिर वे उन्हें आजीवन नहीं छोड़ पाते हैं। इसलिए समय पर इसका निदान जरुरी है। डॉ.सविता रूंगटा ने बच्चे व बच्चियों को किशोरावस्था के मन में कई जिज्ञासा व उलझन होती है। असमंजस के समय में अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए। डॉ.मधुकर प्रकाश ने मानसिक व शारीरिक संतुलन स्थापित करने के उपाय बताया। प्रो.लतिका प्रकाश ने कहा कि वास्तव में किशोरावस्था में बच्चों से संतुलित व्यवहार कर सकने की कला हर अभिभावक के वश की बात नहीं है। मौके पर सूर्यकांता सिंह, चंद्र प्रकाश तिवारी, बीपी गुप्ता, शिव आशीष शुक्ला, एन शंकर, डॉली सिंह, इंदु कुमावत, राकेश कुमार, गरिमा भारद्वाज थे।

केंद्रीय विद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में बच्चों को टिप्स देते वक्ता।

सेन्ट्रल स्कूल में टीकाकरण की शुभारम्भ

सहारा न्यूज ब्यूरो
आरा।

केन्द्रीय विद्यालय जीरो माईल में आज खसरा-रूबेला टीकाकरण अभियान की शुरुआत की गयी, जिसका उद्घाटन श्रम अधीक्षक सह बड़हरा प्रखंड प्रभारी पदाधिकारी राकेश रंजन ने की। इस अवसर पर करीब पॉच सौ बच्चों का टीकाकरण किया गया।

मौके पर उदवन्तनगर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी मदन नारायण सिंह, डॉ. नीरज रहतोगी, इन्द्रेश कुमार, संजीव कुमार, अनन्त नारायण तिवारी, एचएम. श्रीमती सूर्यकान्ता सिंह, चन्द्रप्रकाश तिवारी, बी.पी.गुप्ता, एन.शंकर, श्रीमती डॉली सिंह एवं नर्स मीता सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

टीकाकरण की शुभारम्भ करते अतिथि।

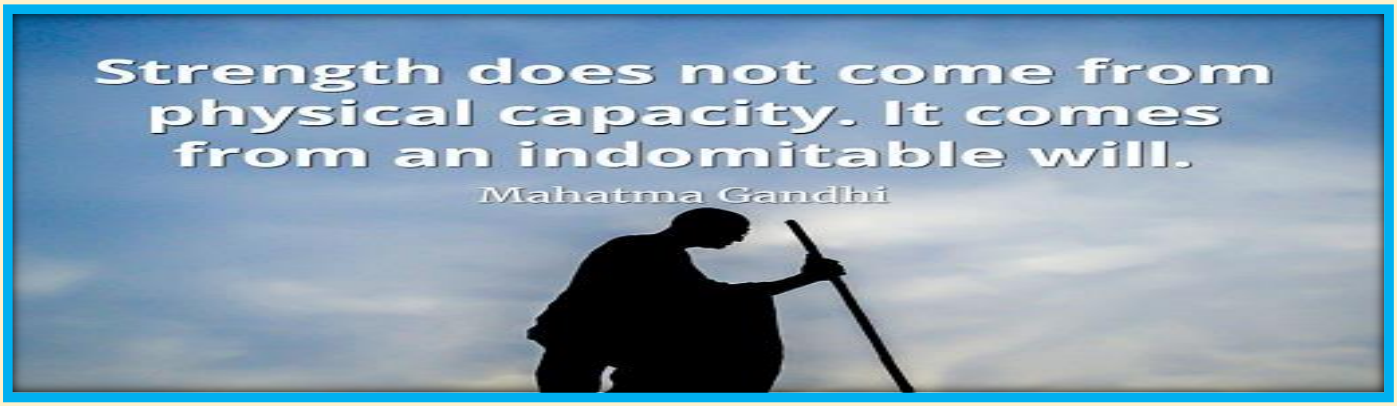
Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will.
Mahatma Gandhi

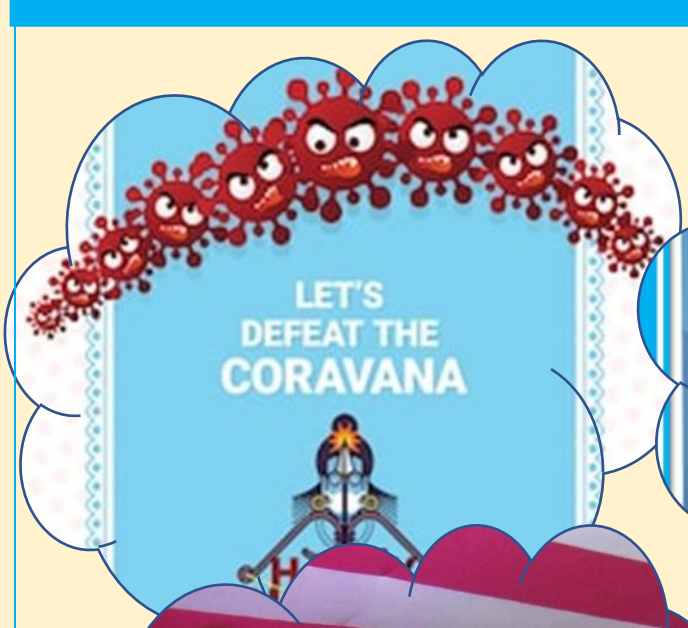
LET'S
DEFEAT THE
CORAVANA

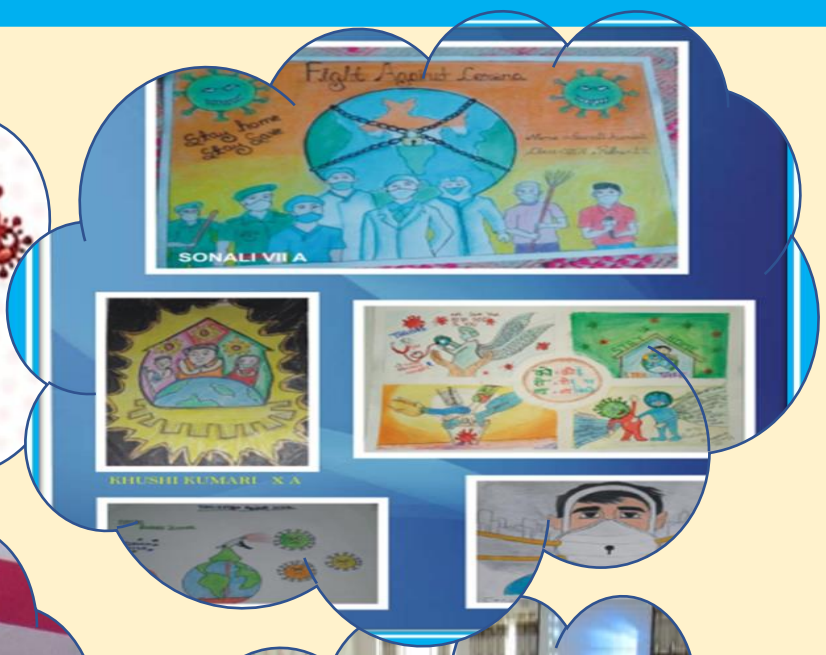
Fight Against Corona
SONALI VII A
KHUSHI KUMARI X A

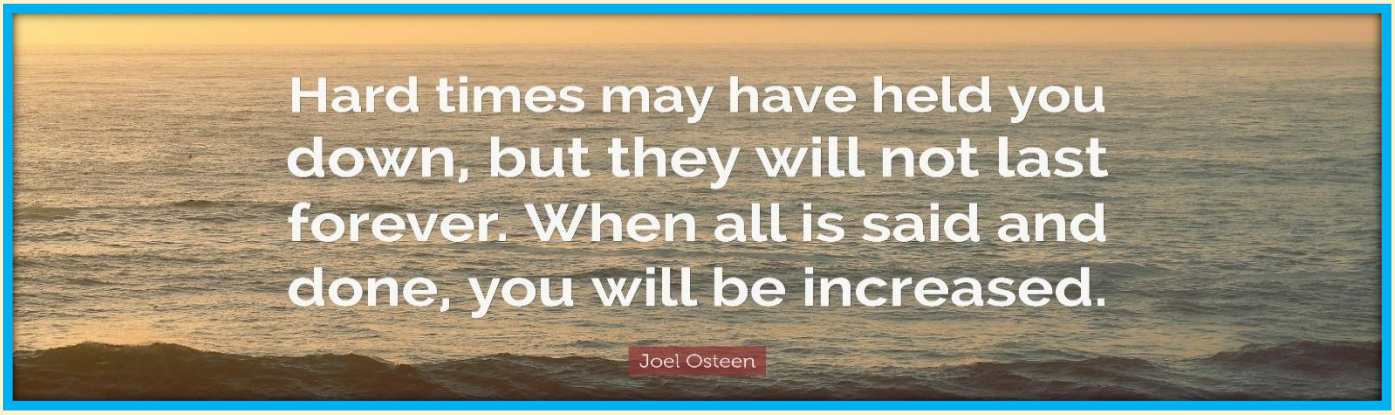
Hard times may have held you down, but they will not last forever. When all is said and done, you will be increased.
Joel Osteen